प्रयागराज, रविवार 21 जून 2026 से 27 जून 2026 तक
वर्ष-14 , अंक-25
पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार
हिन्दी साप्ताहिक

14th ANNIVERSARY

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

अमेरिका-ईरान युद्ध खत्म

ट्रम्प चिल्लाकर बोले- डील साइन, ईरानी राष्ट्रपति ने डिजिटल दस्तखत किए, रिपोर्ट- होर्मुज सिर्फ 60 दिन फ्री रहेगा

वॉशिंगटन। अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध खत्म करने के लिए अंतरिम समझौते पर दस्तखत हो गए हैं। अल जजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक ट्रम्प ने बुधवार को होर्मुज को खोलना और ईरान को परमाणु हथियार से रोकना उनका लक्ष्य था, जो पूरा हो गया है। 2. डील नहीं मानने पर बम बरसाने की चेतावनी:-ट्रम्प ने चेतावनी दी सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका-ईरान समझौते के मसौदे में युद्ध खत्म करने, होर्मुज खोलने, ने अमेरिका को चेतावनी देते हुए कहा है कि अगर वे समझौते के तहत किए गए अपने वादों को पूरा हैं। महल के विशाल उद्यान और भव्य वास्तुकला इसे यूरोपीय राजशाही की शक्ति और वैभव का प्रतीक

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ बैठक के दौरान पेरिस के वर्साय पैलेस में इस दस्तावेज पर साइन किए। इसके बाद ईरानी राष्ट्रपति पजशकियान ने भी ईरान से इलेक्ट्रॉनिक तरीके से समझौते पर दस्तखत किए। भारतीय समय के मुताबिक गुरुवार सुबह 5 बजे इसके ऐलान के तुरंत बाद यह समझौता लागू हो गया। समझौते के तहत ईरान में युद्ध समाप्त होगा और लेबनान में भी संघर्ष खत्म करने की बात कही गई है। साथ ही होर्मुज स्ट्रेट को दोबारा खोलने और अमेरिका की नौसैनिक नाकेबंदी समाप्त करने की बात कही गई है। शांति समझौते पर 19 जून को जेनेवा के पास लूसर्न शहर में साइन होने थे, लेकिन निर्धारित कार्यक्रम से एक दिन पहले ही फ्रांस के ऐतिहासिक वर्साय पैलेस में इस पर दस्तखत कर दिए गए। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्सः-1. ट्रम्प बोले- अमेरिका के टारगेट पूरे, उम्मीद से ज्यादा हासिल किया। ट्रम्प के मुताबिक, युद्ध खत्म करना, है कि अगर ईरान ने अमेरिका के साथ हुए समझौते का उल्लंघन किया, तो उस पर फिर से बमबारी की जाएगी। उन्होंने कहा कि वे ईरान को परमाणु हथियार हासिल नहीं करने देंगे। 3. चीन बोला- तेल निर्यात, प्रतिबंधों में राहत और जमे हुए फंड जारी करने समेत 14 पॉइंट्स पर सहमति बनी है। 5. जेडी वेंस बोले- ईरान को अमेरिका नहीं करते, तो ईरान भी इस समझौते की शर्तों का पालन नहीं करेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प और ईरानी राष्ट्रपति मसूद पजशकियान ने जंग खत्म करने और होर्मुज में जहाजों की आवाजाही फिर से शुरू करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे। फ्रांस की राजधानी पेरिस के पास स्थित वर्साय पैलेस दुनिया के सबसे प्रसिद्ध राजमहलों में गिना जाता है। इसकी शुरुआत 1623 में राजा लुई 13वें के एक छोटे शिकार लॉज के रूप में हुई थी, लेकिन बाद में उनके बेटे लुई 14वें ने इसे भव्य शाही महल में बदल दिया। 1682 में लुई 14वें ने फ्रांस का शाही दरबार और सरकार पेरिस से वर्साय ट्रांसफर कर दी। इसके बाद फ्रांसीसी क्रांति (1789) तक यही महल फ्रांस की राजनीतिक सत्ता का केंद्र बना रहा। महल में करीब 2,300 कमरे हैं। इसका सबसे प्रसिद्ध हिस्सा हॉल ऑफ मिरर्स है, जिसमें 357 शीशे लगे बनाते हैं। वर्साय पैलेस का ऐतिहासिक महत्व भी बेहद खास है। 1919 में प्रथम विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद यहीं वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर हुए थे। इस संधि ने युद्ध को औपचारिक रूप से खत्म किया, हालांकि इसकी कठोर शर्तों को बाद में द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारणों में से एक माना गया। आज वर्साय पैलेस एक संग्रहालय और फ्रांस के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है। इसे यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में भी शामिल किया गया है। पीस डील पर साइन के बाद ब्रेंट क्रूड 78.66 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया है। वहीं अमेरिकी तेल (वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट) 75.81 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया है। पिछले महीने यह 125 डॉलर प्रति बैरल के पार चला गया था। रॉयटर्स के मुताबिक, जंग खत्म होने और होर्मुज स्ट्रेट को फिर से खोलने से जुड़े समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद बाजार में तेल सप्लाई बढ़ने की उम्मीद मजबूत हुई है। इसी वजह से कच्चे तेल की कीमतों पर दबाव बना।

अमेरिका और ईरान ने युद्ध खत्म करने के लिए तैयार किए गए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और ईरानी राष्ट्रपति मसूद पजशकियान ने बुधवार देर रात डिजिटल हस्ताक्षर किए, जिसके साथ ही यह समझौता लागू हो गया। इस डील से जुड़े एक अमेरिकी अधिकारी ने बुधवार को रिपोर्टरों के साथ हुई एक कॉन्फ्रेंस कॉल में 14 पॉइंट्स वाले डील की पूरी जानकारी दी है। इसके मुताबिक होर्मुज को सिर्फ 60 दिनों के लिए मुफ्त खोले जाने की बात कही गई है। वही, ईरान ने परमाणु हथियार नहीं बनाने का भरोसा दिया है। इसके बदले में ईरान के लिए 300 अरब डॉलर (28 लाख करोड़ रुपए) का फंड बनाया जाएगा। अधिकारी ने अपनी पहचान गोपनीय रखने की शर्त पर यह जानकारी दी।

दोनों पक्ष समझौते का पूरी तरह पालन करें:-चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने कहा कि सभी पक्षों को युद्धविराम का सम्मान करना चाहिए। चीन ने ईरान और लेबनान को मानवीय सहायता देने का भी ऐलान किया। 4. लीक ड्राफ्ट में 14 पॉइंट्स पर सहमति का दावाः- का एक डॉलर भी नहीं मिलेगाः- अमेरिकी उपराष्ट्रपति वेंस ने कहा कि 300 अरब डॉलर के पैकेज की खबरें भ्रामक हैं। अगर ईरान शर्तें मानता है तो दूसरे देश निवेश कर सकते हैं, लेकिन अमेरिका पैसा नहीं देगा। ईरान की संसद के स्पीकर मोहम्मद बाघेर गालिबाफ

ईरान-अमेरिका में कल पीस डील, लेकिन अब बातचीत रद्द, दावा- लेबनान पर इजराइली हमले से ईरान नाराज

वॉशिंगटन डीसी/तेहरान। अमेरिका और ईरान के बीच फ्रांस में कल पीस डील साइन हुई थी। दोनों देशों ने तय किया था कि वे 19 जून से डील की शर्तों को लेकर बातचीत करेंगे। इसके लिए अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस को स्विट्जरलैंड जाना था। लेकिन अब यह यात्रा रद्द हो गई है। द गार्डियन की रिपोर्ट के मुताबिक फैसला इतने आखिरी समय हुआ कि वेंस का स्टाफ और उनके साथ जाने वाले पत्रकारों का ग्रुप एयरपोर्ट पहुंच चुका था। वहीं, व्हाइट हाउस के दर्जनों अफसर और कई विदेशी मीडियाकर्मी पहले से ही स्विट्जरलैंड में मौजूद थे। अमेरिकी मीडिया एक्सियोस की एक रिपोर्ट के मुताबिक, वेंस की स्विट्जरलैंड यात्रा टलने के पीछे लेबनान को लेकर ईरान की मांगें वजह हो सकती हैं। दरअसल शांति समझौते में सभी मोर्चों पर लड़ाई खत्म करने की बात कही गई थी। इसमें लेबनान में जारी जंग भी शामिल है। लेकिन इजराइल के लेबनान पर लगातार हमले आगे की बातचीत में मतभेद पैदा कर रहे हैं। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स-1. ईरान-अमेरिका पीस डील लागूः अमेरिका और ईरान के बीच जंग खत्म करने के लिए अंतरिम समझौते पर दस्तखत हो गए हैं। डोनाल्ड ट्रम्प ने बुधवार रात को फ्रांस के वर्साय पैलेस में इससे जुड़े एमओयू पर साइन किए। 2. अमेरिका-ईरान प्रतिनिधि आज स्विट्जरलैंड में मिलेंगेः अमेरिका और ईरान के बीच

युद्धविराम समझौते पर हस्ताक्षर होने के बाद दोनों देशों के बीच पहली औपचारिक वार्ता शुक्रवार को स्विट्जरलैंड के बर्गेनस्टॉक रिजॉर्ट में होगी। 3. इजराइल बोला- लेबनान से पीछे नहीं हटेंगेः इजराइली सेना (आईडीएफ) ने दक्षिणी लेबनान में अपनी तैनाती का नया नक्शा जारी किया है और साफ किया है कि फिलहाल वहां से सैनिक नहीं हटाए जाएंगे। 4. होर्मुज से जहाजों की आवाजाही तेजः पीस डील पर साइन होने के बाद होर्मुज स्ट्रेट में जहाजों की आवाजाही तेज हो गई है। सऊदी अरब के झंडे वाले तीन बड़े तेल टैंकर होर्मुज स्ट्रेट से गुजर चुके हैं। 5. लेबनान में इजराइली हमलों में 3 लोगों की मौतः पीस डील लागू होने के बाद भी इजराइल ने साउथ लेबनान में हमला किया जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई। 2 मार्च से अब तक इन हमलों में 3,900 लोग मारे जा चुके हैं। इजराइल के कट्टरपंथी राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री बेन-गवीर ने दक्षिणी लेबनान में 4 इजराइली सैनिकों की मौत के बाद कहा कि पूरा लेबनान जलना चाहिए। उन्होंने कहा कि इजराइली नागरिकों और सेना के जवानों की सुरक्षा उनकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। बेन-गवीर ने दावा किया कि

ब्रिटेन में एंडी बर्नहैम ने सांसद चुनाव जीता, पीएम स्टार्मर की कुर्सी खतरे में

लंदन। इंग्लैंड के ग्रेटर मैनचेस्टर के मेयर एंडी बर्नहैम ने गुरुवार को

ब्रिटिश संसद का उपचुनाव जीत लिया है। उन्हें करीब 25 हजार वोट मिले जो कुल मतों का 55फीसदी हैं। दूसरे नंबर पर नाइजल फराज की रिफॉर्म यूके पार्टी रही, जिसे 35फीसदी वोट मिले। मुख्य विपक्षी पार्टी कंजरवेटिव को सिर्फ 997 वोट यानी 2फीसदी वोट मिले। बर्नहैम की यह जीत इसलिए अहम मानी जा रही है, क्योंकि इससे ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर की कुर्सी पर खतरा माना जा रहा है। लेबर पार्टी में बर्नहैम, स्टार्मर के सबसे बड़े विरोधी माने जाते हैं। ऐसे में वे अब पार्टी की लीडरशिप के लिए दावेदारी पेश कर सकते हैं। लेबर पार्टी के पास 400 से ज्यादा सांसद हैं। ऐसे में बर्नहैम को कम से कम 81 सांसदों के हस्ताक्षर जुटाने होंगे। इसमें उनका अपना नाम भी शामिल होगा। स्टार्मर की लोकप्रियता काफी गिर चुकी है और पार्टी के कई सांसद पहले ही उनके इस्तीफे की मांग कर चुके हैं। इसलिए राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बर्नहैम के लिए यह समर्थन जुटाना मुश्किल नहीं होगा।

मोदी ने पेरिस में कहा- आज फ्रांस में जितने घर, उससे ज्यादा हमने जरूरतमंदों को दिए-हमने 25 करोड़ भारतीय गरीबी से बाहर निकाले

पेरिस/नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पेरिस में भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि आज मैं ऐसे समय में फ्रांस आया हूं, जब कुछ दिन पहले ही हमारी पार्टनरशिप के 12 साल पूरे हुए हैं। मोदी ने कहा- 12 साल तक देश की सेवा करना मेरे जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य रहा है। ये भारत के लोकतंत्र की शक्ति है, जिसने एक चायवाले को यहां तक पहुंचा दिया। पीएम ने कहा- 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। यानी एक ऐसी प्रगति, जिसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है।

फ्रांस में आज जितने कुल घर हैं, उससे ज्यादा घर हमने भारत में जरूरतमंद लोगों को लिए बनाए हैं। पीएम की स्पीच, 5 बड़ी बातें; कहा- भारत दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल मैन्युफैक्चरर-लोकतंत्र की ताकत, चायवाला पीएम बनाः आज में ऐसे समय में फ्रांस आया हूं, जब कुछ दिन पहले ही हमारी पार्टनरशिप के 12 साल पूरे हुए हैं। 12 साल तक देश की सेवा करना मेरे जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य रहा है। ये भारत के लोकतंत्र की शक्ति है, जिसने एक चायवाले को यहां तक पहुंचा दिया। बीते 12 सालों में 140 करोड़ भारतीयों के अद्भुत सामर्थ्य के रहे हैं। भारत की जीडीपी दोगुना हुई है। भारत में दोगुनी स्पीड से विकास हो रहाः एयरपोर्ट की संख्या दोगुनी हुई है। यूनिवर्सिटी की संख्या भी दोगुनी हो गई है। हाईवे कंस्ट्रक्शन की स्पीड तीन गुना बढ़ गई है। मैं आपको कुछ और फैक्ट्स दूंगा, इससे आप अंदाजा लगा पाएंगे की आज भारत किस स्पीड और कितने बड़े स्केल पर काम कर रहा है। भारत में मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग यूनिट में 100 गुना की बढ़ोतरी हुई है। भारत दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल मैन्युफैक्चरर है। 12 सालों की उपलब्धि को अंकों से नहीं माप सकतेः 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

मैक्रों ने हिंदी में कहा- भारत-फ्रांस की दोस्ती अमर रहे,मित्र नरेंद्र, आपका स्वागत करके बहुत खुशी हुई

पीएम मोदी दिल्ली पहुंचे

पेरिस/नई दिल्ली। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने भारत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए हिंदी में वीडियो मैसेज शेयर किया है। उन्होंने कहा- प्रिय मित्र नरेंद्र, आपका नीस, एवियन और पेरिस के दौरे में स्वागत करते हुए मुझे बहुत खुशी हुई। फ्रांस और भारत की दोस्ती अमर रहे। इसके बाद मुस्कुराते हुए मैक्रों ने कहा, 'मुझे उम्मीद है यह (हिंदी संदेश) सही होगा। डियर प्राइम मिनिस्टर इस दोस्ती के लिए आपका धन्यवाद। मैं अगली फरवरी (भारत यात्रा) आपसे मिलूंगा।' वहीं, फ्रांस से रवाना होने के बाद मोदी ने एक्स पर लिखा- यह यात्रा सहभागिता और उपलब्धियों दोनों के लिहाज से व्यापक रही। दरअसल, पीएम मोदी 6 दिन का फ्रांस और स्लोवाकिया दौरा पूरा करके शुक्रवार सुबह भारत पहुंच चुके हैं। इस दौरान उन्होंने जी7 समिट भी अटेंड की। यहां पीएम की अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से मुलाकात हुई। ट्रम्प ने मोदी की जमकर तारीफ की। 18 जूनः पेरिस में विवाटेक कार्यक्रम में शामिल हुए- पीएम मोदी पेरिस में आयोजित विवाटेक समिट में शामिल हुए थे।

मोदी ने कहा- फ्रांस एक अहम कड़ी का काम कर रहा है जो भारत और यूरोप के टेक इकोसिस्टम को करीब ला रहा है। उन्होंने भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि आज में ऐसे समय में फ्रांस आया हूं, जब कुछ दिन पहले ही हमारी पार्टनरशिप के 12 साल पूरे हुए हैं। मोदी ने कहा कि 12 साल तक देश की सेवा करना मेरे जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य रहा है। ये भारत के लोकतंत्र की शक्ति है, जिसने एक चायवाले को यहां तक पहुंचा दिया। पीएम की स्पीच, 5 बड़ी बातें; कहा- भारत दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल मैन्युफैक्चरर-लोकतंत्र की ताकत, चायवाला पीएम बनाः आज में ऐसे समय में फ्रांस आया हूं, जब कुछ दिन पहले ही हमारी पार्टनरशिप के 12 साल पूरे हुए हैं। 12 साल तक देश की सेवा करना मेरे जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य रहा है। ये भारत के लोकतंत्र की शक्ति है, जिसने एक चायवाले को यहां तक पहुंचा दिया। बीते 12 साल 140 करोड़ भारतीयों के अद्भुत सामर्थ्य के रहे हैं। भारत की जीडीपी दोगुना हुई है। भारत में दोगुनी स्पीड से विकास हो रहाः एयरपोर्ट की संख्या दोगुनी हुई है। यूनिवर्सिटी की संख्या भी दोगुनी हो गई है। हाईवे कंस्ट्रक्शन की स्पीड तीन गुना बढ़ गई है।

मैं आपको कुछ और फैक्ट्स दूंगा, इससे आप अंदाजा लगा पाएंगे की आज भारत किस स्पीड और कितने बड़े स्केल पर काम कर रहा है। भारत में मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग यूनिट में 100 गुना की बढ़ोतरी हुई है। भारत दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल मैन्युफैक्चरर है। 12 सालों की उपलब्धि को अंकों से नहीं माप सकतेः 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। यानी एक ऐसी प्रगति, जिसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है। फ्रांस में आज जितने कुल घर हैं, उससे ज्यादा घर हमने भारत में जरूरतमंद लोगों के लिए बनाए हैं। इन 12 सालों की उपलब्धियों में एक उपलब्धि ऐसी भी है, जिसे अंकों से नहीं मापा जा सकता। वह है 140 करोड़ भारतीयों का आत्मविश्वास। आज का भारत का युवा बहुत बड़े सपने देख रहा है। भारत का किसान नई संभावनाओं के साथ आगे बढ़ रहा है।

स्लीवलेस ड्रेस पहनी ईरानी सिंगर ने तो 74 कोड़ों की सजा मिली-2 साल तक देश छोड़ने पर भी बैन

बिना हिजाब के 2024 में गाना गाया था

तेहरान। ईरान की मशहूर सिंगर परस्तू अहमदी और उनके साथ काम करने वाले 8 लोगों को ऑनलाइन कॉन्सर्ट के लिए 74-74 कोड़े मारने की सजा सुनाई गई है। उन पर 2 साल तक देश छोड़ने और 2 साल तक किसी भी आर्टिस्टिक एक्टिविटीज पर रोक लगाई गई है। यह सजा ईरान के कोम प्रांत की अदालत ने यूट्यूब पर लाइव किए गए एक कॉन्सर्ट के मामले में सुनाई है। अदालत ने आर्टिस्ट पर अश्लील कंटेंट पब्लिश करने और सार्वजनिक शालीनता का उल्लंघन करने का आरोप लगाया है। यह मामला दिसंबर 2024 का है। उस समय 29 साल की परस्तू अहमदी ने बिना हिजाब पहने यूट्यूब पर एक लाइव कॉन्सर्ट किया था। उन्होंने ईरान का लोकप्रिय देशभक्ति गीत 'अज खूने जवानाने वतन' (मातृभूमि के युवाओं के खून से) गाया था। इस दौरान वह बिना हिजाब और स्लीवलेस ड्रेस में थीं। कॉन्सर्ट का वीडियो कुछ ही समय में वायरल हो गया। यूट्यूब पर इसे लाखों लोगों ने देखा। वीडियो जारी होने के बाद ईरानी अधिकारियों ने परस्तू अहमदी और कई संगीतकारों को कुछ समय के लिए हिरासत में लिया था। बाद में उन्हें रिहा कर दिया गया, लेकिन वीडियो अपलोड करने के मामले में उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई जारी रही। गाने में 4 पुरुषों के साथ स्लीवेस ड्रेस में दिखीं-परस्तू

अहमदी ने 27 मिनट का एक वीडियो शेयर किया था। इसमें वह बिना हिजाब और स्लीवलेस ड्रेस पहनकर चार पुरुष संगीतकारों के साथ गाना गाती नजर आ रही थीं। वीडियो के कैप्शन में उन्होंने इसे काल्पनिक कॉन्सर्ट बताया था। परस्तू के इस वीडियो को कई लोगों ने महिलाओं की अभिव्यक्ति की आजादी का प्रतीक बताया। ईरानी अधिकारियों ने इसे कानून के खिलाफ माना। ईरान में महिलाओं के लिए सार्वजनिक जगहों पर हिजाब पहनना अनिवार्य है। अधिकारियों ने बिना हिजाब पहनकर गाने को नियमों का उल्लंघन माना। ईरान में महिलाओं पर कई सामाजिक प्रतिबंध हैं। कानून के अनुसार वे सार्वजनिक जगह पर अकेले गाना नहीं गा सकतीं और बिना हिजाब लोगों के सामने नहीं आ सकतीं। परस्तू अहमदी ने इन नियमों का खुलकर विरोध किया। वे पहली बार 2022 में हिजाब विरोधी प्रदर्शनों के दौरान चर्चा में आई थीं। उन पर इन प्रदर्शनों के समर्थन में गाना गाने का आरोप लगा था। इसके बाद सुरक्षा एजेंसियों ने उनसे पूछताछ की और उनके घर की तलाशी भी ली थी। अमेरिका स्थित मानवाधिकार संगठन सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स इन ईरान की एडवोकेसी डायरेक्टर बहार घंदेहरी ने इस सजा की आलोचना की है। उनका कहना है कि सिर्फ गाना गाने और बिना हिजाब सार्वजनिक रूप से नजर आने पर 74 कोड़ों की सजा देना दिखाता है कि ईरान में मानवाधिकारों की स्थिति अब भी नहीं बदली है।मानवाधिकार वकील मोइन खजाएली ने भी फैसले पर सवाल उठाए हैं।

ईरान डील पर टिका अमेरिकी उपराष्ट्रपति वेंस का फ्यूचर,जंग रुकी तो 2028 में राष्ट्रपति बनने के सबसे बड़े दावेदार, फेल हुई तो करियर बरबाद

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका और ईरान के बीच बुधवार रात ऐतिहासिक और विवादित पीस डील हुई। इसके बाद से अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस इसका सबसे बड़ा चेहरा बनकर उभरे हैं। ?बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक वेंस लगातार फ्रंट फुट पर आकर इस फैसले का बचाव कर रहे हैं। व्हाइट हाउस की प्रेस ब्रीफिंग से लेकर द न्यूयॉर्क टाइम्स को दिए इंटरव्यू तक, वेंस इस डील को डिफेंड करने की पूरी कमान संभाले हुए हैं। जब इस समझौते को लेकर इजराइल और अमेरिकी रिपब्लिकन पार्टी के अंदर से ही तीखी आलोचना शुरू हुई, तो वेंस ने बेहद कड़े शब्दों में जवाब दिया। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान एक रिपोर्टर ने उनसे पूछा कि क्या राष्ट्रपति ट्रम्प ने उन्हें अमेरिका-ईरान समझौते के लिए 'बलि का बकरा' बना दिया है। इस पर वेंस ने कहा कि उन्हें लगता है कि ट्रम्प मजाक कर रहे थे। दरअसल, एक दिन पहले ट्रम्प ने कहा था कि अगर यह समझौता विफल हो जाता है तो वह इसका दोष वेंस पर डाल सकते हैं। हाल के महीनों में वह कई बार ऐसा बयान दे चुके हैं। रिपोर्ट के मुताबिक अगर ईरान के साथ हुआ समझौता कामयाब होता है तो वे 2028 में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के सबसे बड़े दावेदार हो सकते हैं। ईरान के साथ बातचीत का जिम्मा वेंस के कंधे पर-व्हाइट हाउस के मुताबिक, जेडी वेंस राष्ट्रपति ट्रम्प की राष्ट्रीय सुरक्षा टीम के सबसे भरोसेमंद सदस्य बनकर उभरे हैं। ट्रम्प के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ और जैरेड कुशनर के साथ मिलकर वेंस ने इस डील की बैक-चैनल बातचीत की अगुआई की है। स्विट्जरलैंड में होने वाली आगामी 60 दिनों की औपचारिक तकनीकी वार्ताओं की देखरेख का जिम्मा भी वेंस के कंधों पर है। चूंकि ट्रम्प ने इस पूरी बातचीत की प्रक्रिया में वेंस को प्रमुख भूमिका दी है, इसलिए इस समझौते की सफलता या विफलता का सबसे बड़ा राजनीतिक असर भी उन्हीं पर पड़ सकता है। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यदि यह शांति समझौता सफल रहता है और मिडिल ईस्ट में युद्ध रुक जाता है, तो साल 2028 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में जेडी वेंस खुद को एक कुशल डिप्लोमैट और युद्ध खत्म कराने वाले 'ग्लोबल लीडर' के रूप में पेश कर सकेंगे। वेंस की किताब की अमेरिकी मीडिया खूब चर्चा हो रही-16 जून को वेंस की किताब 'कम्यूनियनः फाइडिंग माई वे बैक टू फेथ' रिलीज हुई है। राजनीतिक गलियारों और अमेरिकी मीडिया में इस किताब की टाइमिंग और इसके कंटेंट को सीधे तौर पर साल 2028 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में उनकी संभावित दावेदारी से जोड़कर देखा जा रहा है। अमेरिकी राजनीति के इतिहासकार इस किताब की तुलना 1975 में जिमी कार्टर की लिखी गई किताब 'व्हाए नॉट द बेस्ट' से कर रहे हैं। कार्टर ने राष्ट्रपति चुनाव जीतने से ठीक पहले अपनी आस्था और धर्म पर किताब लिखी थी, जिसने अमेरिकी जनता, विशेषकर धार्मिक झुकाव वाले वोटर्स के बीच उन्हें एक 'भरोसेमंद चेहरा' बना दिया था। जेडी वेंस भी इसी रास्ते पर चल रहे हैं। **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

ऑटो-ईरिक्शा पर क्यूआर कोड अनिवार्य, एक स्कैन में मिलेगी ड्राइवर की पूरी कुंडली,डीसीपी ट्रैफिक रवीना त्यागी आईपीएस की डिजिटल पहल से महिला सुरक्षा होगी मजबूत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। राजधानी में अब ऑटो और ई-रिक्शा में बैठना होगा ज्यादा सुरक्षित। लखनऊ ट्रैफिक पुलिस ने बड़ा फैसला लिया है। डीसीपी ट्रैफिक रवीना त्यागी आईपीएस के आदेश पर अब शहर के सभी ई-रिक्शा और ऑटो पर क्यूआर कोड लगाना अनिवार्य कर दिया गया है। क्या बदलेगा? अब कोई भी यात्री ऑटो में बैठने से पहले वाहन पर लगे क्यूआर कोड को मोबाइल से स्कैन कर सकेगा। स्कैन करते ही ड्राइवर का नाम, फोटो, मोबाइल नंबर, गाड़ी नंबर, परमिट और इंश्योरेंस की पूरी कुंडली स्क्रीन पर आ जाएगी। क्यों है ये जरूरी? महिला सुरक्षाः रात में सफर करने वाली महिलाओं के लिए वरदान। कोई दिक्कत हुई तो ड्राइवर की पहचान 2 सेकंड में। किराया विवाद खत्मः मनमाना किराया वसूलने वालों पर लगाम। क्राइम कंट्रोलः घटना होने पर पुलिस मिनटों में आरोपी तक पहुंचेगी। फर्जी ड्राइवर आउटः बिना परमिट वाले।

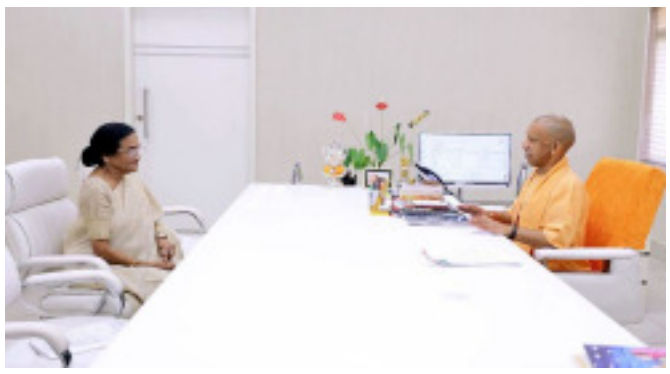

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मुख्यमंत्री श्री MYogiAdityanath जी महाराज से आज लखनऊ में उत्तर प्रदेश सरकार में पूर्व मंत्री एवं पूर्व सांसद प्रो. रीता बहुगुणा जोशी जी ने शिष्टाचार भेंट की।

विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा, जब हमारे किसान सशक्त एवं समृद्ध होंगे - मा0 प्रभारी मंत्रा

केन्द्र एवं प्रदेश सरकार किसानों की आय बढ़ाने एवं कृषि को लाभकारी बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत,सरकार किसानों को तकनीकी सहयोग, प्रशिक्षण एवं आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध - राकेश सचान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। केन्द्र सरकार के 12 वर्ष एवं प्रदेश सरकार के 09 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में सामुदायिक केन्द्र रतापुर में आयोजित 'विकसित भारत संकल्प सम्मेलन एवं विकास प्रदर्शनी' के तृतीय दिवस पर कृषि सूचना तंत्र के सुदृढ़ीकरण एवं कृषक जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत प्राकृतिक खेती कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मा0 प्रभारी मंत्री जनपद/मा0 मंत्री खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग विभाग उ0प्र0 राकेश सचान ने मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर मा0 जिला अध्यक्ष भाजपा बुद्धिलाल पासी, जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका, मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, प्रभागीय निदेशक सामाजिक वानिकी प्रभाग प्रखर मिश्र उपस्थित रहें। कार्यक्रम के प्रारंभ में मा0 प्रभारी मंत्री द्वारा विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉलों का अवलोकन किया गया। अवलोकन के दौरान योजनाओं की प्रगति की जानकारी प्राप्त की गई तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। इसी दौरान तीन बच्चों का अन्नप्राशन कराया गया तथा तीन गर्भवती महिलाओं को पोषण किट वितरित कर उन्हें स्वस्थ जीवन के लिए प्रेरित किया गया। इसके उपरांत अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर प्राकृतिक खेती कार्यशाला का शुभारंभ किया गया।कार्यक्रम में मा0 प्रभारी मंत्री द्वारा पीएम स्वनिधि के 05 लाभार्थी, पीएम किसान सम्मान निधि के 05 लाभार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये। इसके साथ ही 10 किसानों को मिनीकिट (उर्द, मूंग, बाजरा), 10 किसानों को प्राकृतिक खेती की किट, सोलर पम्प के 05 लाभार्थियों को प्रमाण पत्र, फार्मर मशीनरी योजनान्तर्गत 02 किसानों को चाभी वितरित की गई। मा0 प्रभारी मंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि केन्द्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में सेवा, सुशासन एवं जनकल्याण को समर्पित 'विकसित भारत संकल्प सम्मेलन एवं विकास प्रदर्शनियों'' का आयोजन पूरे प्रदेश में किया जा रहा है जिसमें मा0 प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हुए अभूतपूर्व विकास, डिजिटल क्रांति और जन कल्याणकारी योजनाओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मा0 प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने विश्वास के, विकास के एवं जनकल्याण के अपने 12 गौरवशाली वर्ष पूर्ण किये हैं। कार्यक्रमों में एक भव्य विकास प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। जो पिछले 12 वर्षों में कृषि, विज्ञान, डिजिटल तकनीकी, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में देश की प्रगति को दर्शाती है। इसके साथ ही जनसामान्य को सीधे लाभ पहुंचाने के लिए विभिन्न स्थानों पर स्वास्थ्य मेले, कौशल विकास शिविर और जन कल्याणकारी स्टॉल लगाये गये हैं। जन कल्याण शिविरों के माध्यम से लाभार्थियों को योजनाओं को लाभ प्रदान किया जा रहा है। महिलाओं और युवाओं से संवाद कर उन्हें रोजगार सृजन और कौशल विकास कार्यक्रमों से जोड़ा जा रहा है।प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर प्राकृतिक खेती विषयक कार्यशालाएं आयोजित की जा रही है। मा0 प्रभारी मंत्री ने कहा कि केन्द्र एवं प्रदेश सरकार किसानों की आय बढ़ाने एवं कृषि को लाभकारी बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने प्राकृतिक खेती को समय की आवश्यकता बताते हुए कहा कि यह न केवल लागत को कम करती है, बल्कि भूमि की उर्वरता को भी बनाए रखती है। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग से जहां एक ओर मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होती है, वहीं दूसरी ओर स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। ऐसे में प्राकृतिक खेती एक स्थायी एवं सुरक्षित विकल्प के रूप में उभर रही है। मंत्री ने किसानों से आह्वान किया कि वे प्राकृतिक खेती को अपनाकर आत्मनिर्भर बनें तथा अपनी आय में वृद्धि करें। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों को तकनीकी सहयोग, प्रशिक्षण एवं आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने यह भी कहा कि विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा, जब हमारे किसान सशक्त एवं समृद्ध होंगे। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों व कृषि विशेषज्ञों द्वारा भी अपने विचार व्यक्त किये गये तथा प्राकृतिक खेती की उपयोगिता के बारे में प्रकाश डाला गया। मंच का संचालन एस0एस0 पांडेय द्वारा किया गया तथा सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के पंजीकृत दलों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 नवीन चन्द्रा, क्षेत्राधिकारी नगर अरूण कुमार, उपायुक्त (श्रम रोजगार) प्रमोद सिंह, जिला विकास अधिकारी वर्षा सिंह, उप निदेशक कृषि हिमांशु पाण्डेय, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ0 कुलदीप द्विवेदी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल सिंह, जिला कृषि अधिकारी अखिलेश पाण्डेय, परियोजना निदेशक डूडा शशी कुमार मेहरोत्रा, सिटी मिशन मैनेजर नेहा श्रीवास्तव, पूर्व विधायक रामलाल अकेला, जिला अध्यक्ष अपना दल एस सतेन्द्र पटेल, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष किसान मोर्चा राकेश शर्मा, जिला अध्यक्ष किसान मोर्चा कमलेश चौधरी, शीवेन्द्र सिंह, शरद सिंह, जन्मेजय सिंह सहित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में किसान, जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित रहें।

उदप्रद कौशल विकास मिशन प्रयागराज,महापौर प्रयागराज द्वारा किया गया तथा 31 प्रशिक्षार्थियों को नियुक्ति पत्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। उ0प्र0 कौशल विकास मिशन, राजकीय आई0टी0आई0 एवं क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय प्रयागराज के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 19 जून, 2026 को राजकीय आई0टी0आई0 नैनी, प्रयागराज में प्रातः 10:00 बजे से एक दिवसीय मण्डल स्तरीय वृहद रोजगार मेले का शुभारम्भ माननीय मुख्य अतिथि श्री गणेश केशरवानी महापौर प्रयागराज द्वारा किया गया तथा 31 प्रशिक्षार्थियों को नियुक्ति पत्र मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान किया गया जिनका मासिक वेतन रूपये 15000 से 27500 तय किया गया एवं मेले में श्री विनय कुमार सिंह सिटी मजिस्ट्रेट प्रयागराज श्री राजकुमार संयुक्त निदेशक प्रयागराज मण्डल, प्रयागराज, श्री अशोक कुमार प्रधानाचार्य राजकीय आई0टी0आई0 नैनी प्रयागराज, श्रीमती ऑगस्टिना फासिंस नोडल अधिकारी उ0प्र0 कौशल विकास मिशन लखनऊ, श्री हिमांशु द्विवेदी प्रधानाचार्य कटरा प्रयागराज, श्रीमती सीमा रंजन अग्रवाल, श्री मोहन लाल उप प्रधानाचार्य नैनी प्रयागराज एवं प्रधानाचार्य फतेहपुर, कौशाम्बी प्रतापगढ़ उपस्थित रहें। उक्त मेले में निजी क्षेत्र की कम्पनी टाटा मोटर्स, फ्लिपकार्ट, रिलाइंस भारत मोटर्स, लावा मोबाइल, क्लिंकिट, लेनोवो जैसी इत्यादि 51 कम्पनियों द्वारा लगभग 9000 रिक्त पदो के सापेक्ष 6198 प्रशिक्षार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया जिनमें 2268 प्रशिक्षार्थियों का चयन विभिन्न कम्पनियों द्वारा किया गया है।

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के जन्मदिन पर रक्तदान शिविर कार्यक्रम आयोजित किया गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। राहुल गांधी जी के जन्मदिवस के अवसर पर युवा नेता ऋषभ राघवेंद्र बाजपेई द्वारा आयोजित विशाल रक्तदान शिविर किया गया यह कार्यक्रम ऐतिहासिक रूप से सफल रहा मानव सेवा के इस महाअभियान में युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और बड़ी संख्या में रक्तदान कर जरूरतमंदों के जीवन की रक्षा का संकल्प लिया समाज के हर वर्ग के लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए इस आयोजन को सफल बनाया इस अवसर पर अनिल मिश्रा शिव नारायण मिश्रा शिव बाबू शुक्ला हरिओम मिश्रा आमिर अली वीरेंद्र गुप्ता उदयराज यादव अरुण सिंघल आशीष शर्मा अमित तिवारी लव मिश्रा मनीष अवस्थी विवेक मिश्रा अनूप त्रिपाठी बबलू मिश्रा शिवम त्रिवेदी सहित अनेक साथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है और रक्तदान सबसे बड़ा महादान रक्तदान शिविर में शामिल सभी रक्तवीरों सहयोगियों एवं शुभचिंतकों का हृदय से आभार एवं अभिनंदन ऋषभ राघवेंद्र बाजपेई आपका एक यूनिट रक्त किसी की पूरी जिंदगी बचा सकता है।

राहुल गांधी के जन्मदिन पर महिला कांग्रेस का महिला स्वास्थ्य एवं सशक्तिकरण कार्यक्रम किया गया

हजारों महिलाओं को मुफ्त में वितरित किए गए सेनेटरी पैड

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शहर के रामा कृष्णा इंटर कॉलेज में महिला संगठन के द्वारा रायबरेली के सांसद नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के जन्मदिन के अवसर पर रायबरेली महिला जिला कांग्रेस द्वारा महिला स्वास्थ्य सम्मान और सशक्तिकरण को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया इस अवसर पर संगीता गर्ग राष्ट्रीय समन्वयक अखिल भारतीय महिला कांग्रेस ने कहा कि महिलाओं का स्वास्थ्य और सम्मान किसी भी समाज की प्रगति का आधार है एक महिला जब स्वस्थ शिक्षित और निर्णय लेने की प्रक्रिया में बराबर की भागीदार बनें संगीता गर्ग ने आगे कहा कि महिलाओं की सुरक्षा शिक्षा रोजगार और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को मजबूती से उठाना महिला कांग्रेस की प्राथमिकता है हमारा प्रयास है कि हर बहन को सम्मान मिले समर्पित कार्यक्रम का आयोजन किया गया कार्यक्रम की अध्यक्षता महिला कांग्रेस जिला अध्यक्ष शैलजा शर्मा ने कीकार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संगीता गर्ग, राष्ट्रीय समन्वयक अखिल भारतीय महिला कांग्रेस एवं ममता चौधरी प्रदेश अध्यक्ष उत्तर प्रदेश मध्य ज़ोन महिला कांग्रेस उपस्थित रहींकार्यक्रम के दौरान हजारों महिलाओं को सेनेटरी पैड वितरित किए गए और स्वस्थ महावारी महिला स्वास्थ्य एवं आत्मनिर्भर होती है तो पूरा परिवार और समाज मजबूत होता है महिला स्वास्थ्य जैसे विषयों पर खुलकर बात करना और हर जरूरतमंद महिला तक जरूरी सुविधाएँ पहुँचाना हमारी जिम्मेदारी है ममता चौधरी ने कहा कांग्रेस पार्टी हमेशा से महिलाओं के अधिकार सम्मान और बराबरी के अवसरों की लड़ाई लड़ती रही है राहुल गांधी का भी यह विश्वास है कि देश की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब महिलाएँ हर बेटी को अवसर मिले और महिलाएँ आत्मनिर्भर बनकर आगे बढ़ें कार्यक्रम में शैलजा सिंह ने उत्तर प्रदेश में महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर भी चर्चा की वक्ताओं ने कहा कि देश की बेटियों की सुरक्षा महिलाओं का सम्मान और युवतियों को बेहतर अवसर देना समय की आवश्यकता है महिला कांग्रेस ने संकल्प लिया कि महिलाओं के स्वास्थ्य अधिकार और सशक्तिकरण के लिए निरंतर जनसेवा के कार्य जारी रहेंगे

विशेष प्रवर्तन अभियान 20 से 26 जून तक-अवैध मदिरा के निर्माण एवं तस्करी पर अंकुश के लिए तहसीलवार टीमें गठित - डीएम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने कहा कि मुहर्रम के त्यौहार को सकुशल, शान्तिपूर्ण सम्पन्न कराये जाने हेतु अवैध मदिरा के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी की संभावना के दृष्टिगत 20 जून से 26 जून 2026 तक विशेष प्रवर्तन अभियान चलाया जाना है। जिसमें अवैध मदिरा के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी तथा अवैध अल्कोहल/शीरा के परिवहन पर अंकुश लगाए जाने हेतु समस्त तहसीलवार टीमों का गठन किया है। जिलाधिकारी ने आबकारी, पुलिस एवं राजस्व प्रशासन के अधिकारियों की संयुक्त टीम बनाकर प्रभावी प्रवर्तन कार्य सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि पूरे जनपद में विशेष प्रवर्तन अभियान चलाकर अवैध शराब के निर्माण, तस्करी, परिवहन आदि पर प्रभावी अंकुश लगाया जाए। इस कार्य के लिए प्रत्येक तहसील में उप जिलाधिकारी, क्षेत्राधिकारी तथा आबकारी निरीक्षक विशेष रूप से सक्रिय रहेंगे। पूरे जनपद में 6 प्रवर्तन दलों का गठन किया गया है।

जन चौपाल में पढ़ी जा रही आवास प्लस सर्वेक्षण-2024 की पात्रता सूची, ग्रामीणों को आपत्ति दर्ज कराने का अवसर

पारदर्शिता, जनसहभागिता और पात्र लाभार्थियों के चयन को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत आवास प्लस सर्वेक्षण-2024 की पात्रता सूची जनपद सोनभद्र की ग्राम पंचायतों में जन चौपाल के माध्यम से सार्वजनिक रूप से पढ़कर सुनाई जा रही है। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ के निर्देश के क्रम में संचालित इस प्रक्रिया का उद्देश्य योजना के अंतर्गत पात्र एवं जरूरतमंद परिवारों का निष्पक्ष एवं पारदर्शी चयन सुनिश्चित करना है। जन चौपाल के दौरान ग्रामवासियों के समक्ष पात्रता सूची प्रस्तुत की जा रही है, जिससे प्रत्येक नागरिक संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि जन चौपाल की कार्यवाही पूर्ण पारदर्शिता एवं निष्पक्षता के साथ संपन्न कराई जाए तथा ग्रामीणों को अपनी बात रखने का पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप योजना का लाभ केवल वास्तविक एवं पात्र लाभार्थियों तक पहुंचाना प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने जनपदवासियों से अपील की है कि वे जन चौपाल में सक्रिय सहभागिता करें तथा यदि सूची में किसी प्रकार की त्रुटि अथवा आपत्ति हो तो उसे समयबद्ध रूप से दर्ज कराएं, ताकि पात्र परिवारों को योजना का लाभ सुनिश्चित किया जा सके। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत यह पहल पारदर्शी प्रशासन, जनभागीदारी एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

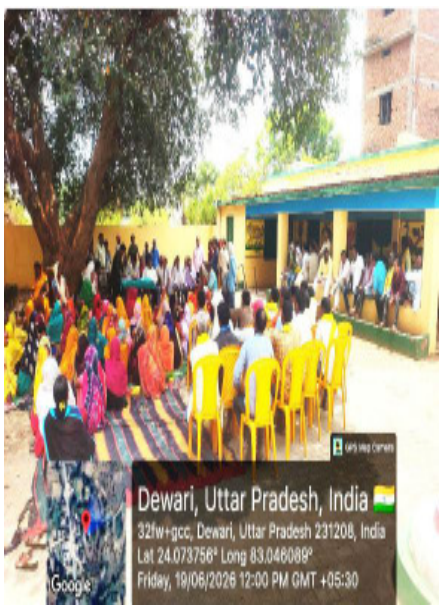

आईएमएस नोएडा में योग कार्यशाला का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (आईएमएस) नोएडा ने योग कार्यशाला का आयोजन हुआ। शुक्रवार को सेक्टर 62 स्थित

संस्थान परिसर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान बतौर प्रशिक्षक योग गुरु वैशाली गौतम ने प्रतिभागियों को सूर्य नमस्कार, योग, ध्यान, व्यायाम एवं प्राणायाम कराएं। वहीं योग शिविर के दौरान विश्व योगासन चैम्पियनशिप 2026 के स्वर्ण पदक विजेता आकाश शर्मा, संस्थान के स्टाफ, फैकल्टी एवं छात्रों ने अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। योग कार्यशाला की शुरुआत योग गुरु वैशाली गौतम ने ॐ की ध्वनि एवं सूर्य नमस्कार से कराया। उन्होंने कहा कि इंसान को जीवन जीने के लिए शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान देने की जरूरत है। हम योग के माध्यम से अपनी चिंताओं से दूर होकर आध्यात्मिक सशक्तिकरण का आरंभ कर सकते हैं। आध्यात्मिक जागृति हमें व्यर्थ और नकारात्मक भावों से दूर कर सकारात्मक विचारों की शक्ति देता है।आईएमएस के वाइस प्रेसिडेंट चिराग गुप्ता ने योग शिविर की सराहना करते हुए कहा कि आज की तेज रफ्तार जिंदगी में योग एक ऐसी साधना है जो व्यक्ति को आंतरिक रूप से सशक्त बनाती है। हमारे छात्रों के समग्र विकास के लिए इस प्रकार के आयोजन अत्यंत आवश्यक हैं। वही योग दिवस पर कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए प्रतिभागियों को बधाई देते हुए आकाश शर्मा ने कहा कि जीवन को खुशहाल बनाने के लिए स्वस्थ शरीर के साथ-साथ स्वस्थ मस्तिष्क का होना जरूरी है। योग एक ऐसा माध्यम है जिनसे इन दोनो ही जरूरतों की पूरा किया जा सकता है। वहीं आज के कार्यक्रम की संयोजक एवं आईएमएस स्पोर्ट्स क्लब की हेड रीना मैसी ने कहा कि प्रत्येक आसन और मुद्रा को करने की कुछ आवश्यक नियम हैं। आप चाहे तो अपने घर के बालकनी में आवश्यक नियम का पालन करते हुए योग कर सकते हैं। योग हमारी रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के साथ-साथ हमें स्फूर्ति प्रदान करता है।

भाजपा शहीद भगत सिंह मंडल ने जनसंपर्क अभियान चलाया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। भारतीय जनता पार्टी के शहीद भगत सिंह मंडल, नोएडा महानगर द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के '12 साल बेमिसाल' कार्यक्रम के अंतर्गत जनसंपर्क अभियान चलाया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश सेवा के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनके द्वारा लिए गए अनेक जनहित एवं राष्ट्रहित के महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक निर्णयों तथा विकास कार्यों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य मंडल की पूरी टीम द्वारा बड़े ही समर्पण एवं मजबूती के साथ किया जा रहा है। इसी क्रम में ग्राम हल्द्वानी में प्रबुद्धजनों के साथ जनसंपर्क अभियान आयोजित किया गया। इस अवसर पर शहीद भगत सिंह मंडल के अध्यक्ष गौतम शर्मा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ मंडल महामंत्री राजीव उपाध्याय राकेश प्रसाद तथा उपाध्यक्ष बी.एल. सिंह उमेश भाटी दिनेश सैनी नरेश भारद्वाज बलवंत सिंह राजेंद्र शर्माजी भी उपस्थित रहे।

पैरा खेल महाकुंभ को लेकर उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य से मिले मुखिया अरुण यादव,नोएडा में जुलाई में जुटेंगे देशभर के पैरा खिलाड़ी, खेल क्रांति मुहिम को मिलेगी नई उड़ान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। नोएडा में जुलाई माह में युवा क्रांति सेना के द्वारा आयोजित होने वाले पैरा खेल महाकुंभ को लेकर श्री आनंदम धाम ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं नोएडा निवासी मुखिया अरुण यादव ने उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य से लखनऊ में मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने महाकुंभ की रूपरेखा, उद्देश्य और देशभर से आने वाले पैरा खिलाड़ियों की भागीदारी को लेकर विस्तृत चर्चा की। मुलाकात के बाद मुखिया अरुण यादव ने कहा कि पैरा खेल महाकुंभ सिर्फ एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि समाज में खेल क्रांति और समान अवसर की दिशा में एक बड़ा कदम है। दिव्यांग खिलाड़ियों में अद्भुत प्रतिभा और हौसला है, जरूरत है उन्हें सही मंच और सम्मान देने की। उन्होंने कहा, 'हमारा प्रयास है कि नोएडा से एक ऐसा संदेश जाए, जहां हर खिलाड़ी को उसकी क्षमता के आधार पर पहचान मिले। पैरा खिलाड़ी हमारे समाज की प्रेरणा हैं, जिन्होंने संघर्षों को अपनी ताकत बनाकर देश का नाम रोशन किया है।' जुलाई में आयोजित होने वाले इस महाकुंभ में देशभर के पैरा खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। प्रतियोगिताओं में शूटिंग, आर्चरी, बैडमिंटन, पावरलिफ्टिंग, शॉटपुट, जैवलिन थ्रो, 100 मीटर एवं 400 मीटर रेस, टेबल टेनिस और डिस्कस थ्रो जैसे खेल शामिल होंगे।

मुखिया अरुण यादव ने कहा कि उप मुख्यमंत्री जी से हुई मुलाकात से आयोजन को नई प्रेरणा मिली है और यह महाकुंभ पैरा खिलाड़ियों के लिए एक ऐतिहासिक मंच साबित होगा।

सिटी मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में योग साधकों ने लिया नशा छोड़ने का प्रण

मातृभूमि सेवा मिशन के पांच दिवसीय योग महोत्सव में योगाभ्यास के साथ शुरू हुआ नशामुक्त भारत अभियान का जनजागरण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शहीदों की पावन धरा पर स्थित राणा बेनी माधव भगत सिंह पार्क में योग की ऊर्जा के साथ स्वस्थ और संस्कारित समाज निर्माण का संदेश गूंजा। मातृभूमि सेवा मिशन रायबरेली इकाई के पांच दिवसीय योग महोत्सव के दूसरे दिन सिटी मजिस्ट्रेट राम अवतार ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। योगाभ्यास के बाद नशामुक्त भारत अभियान के तहत योग साधकों एवं नागरिकों को नशा त्यागने का सामूहिक संकल्प दिलाया गया। डॉ. ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी ने नशामुक्ति का संकल्प दोहराया, जिसके बाद बड़ी संख्या में मौजूद साधकों ने एक स्वर में नशे से दूर रहने और समाज को जागरूक करने का प्रण लिया। सिटी मजिस्ट्रेट राम अवतार ने कहा कि योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि यह व्यक्ति के विचारों, व्यवहार और जीवनशैली में सकारात्मक परिवर्तन लाने का माध्यम है। योग आत्मअनुशासन और संयम सिखाता है, जबकि नशा व्यक्ति के साथ-साथ परिवार और समाज को कमजोर करता है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए प्रत्येक व्यक्ति को योग अपनाने और नशे से दूरी बनाने का संकल्प लेना होगा। उन्होंने कहा कि योग को केवल 21 जून तक सीमित न रखकर इसे प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल करना चाहिए, क्योंकि नियमित योग स्वस्थ शरीर के साथ स्वस्थ सोच भी प्रदान करता है।मातृभूमि सेवा मिशन इकाई के संयोजक प्रदीप पांडेय के निर्देशन में आयोजित योग महोत्सव के अध्यक्ष भगवत प्रताप सिंह एवं डॉ. ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी ने किया। योग प्रशिक्षकों के निर्देशन में साधकों ने योगासन, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास किया। पर्यावरण संरक्षण के संदेश के साथ पौधारोपण भी किया गया। इस अवसर पर अजय मिश्रा, देवेंद्र मिश्रा, चंपा श्रीवास्तव, राज अग्रहरी, अनूप शर्मा, रोहित, अवधेश सिंह, दिनेश मिश्रा, सुमन देवी, माया देवी, रश्मि पांडेय, सीमा, सृष्टि, आराध्या एवं शिवांशी,प्रकाश सहित बड़ी संख्या में योग साधक एवं गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

सेवा, सुशासन एवं गरीब कल्याण के 12 वर्ष पूर्ण होने पर कृषि मेले का आयोजन,प्रभारी मंत्री हंसराज विश्वकर्मा ने प्रदर्शनी का किया अवलोकन, योजनाओं की दी जानकारी

कृषकों को सम्मानित कर वितरित किए बीज किट, कृषि क्षेत्र में नवाचार अपनाने का आह्वान,केंद्र एवं प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से किसानों की आय में हो रही वृद्धि

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सेवा, सुशासन एवं गरीब कल्याण के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में जनपद सोनभद्र के विकास खंड रावर्टसगंज के ग्राम मंहुराही में आयोजित दो दिवसीय कृषि मेले एवं प्रदर्शनी में प्रदेश सरकार के माननीय प्रभारी मंत्री श्री हंसराज विश्वकर्मा जी ने प्रतिभाग किया।

कार्यक्रम के दौरान माननीय मंत्री जी ने सर्वप्रथम कृषि विभाग एवं अन्य विभागों द्वारा लगाई गई जनकल्याणकारी योजनाओं से संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा विभिन्न स्टॉलों पर प्रदर्शित तकनीकों एवं योजनाओं की जानकारी प्राप्त की।इसके उपरांत माननीय मंत्री जी ने भगवान श्री गणेश जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है।

किसानों की आय दोगुनी करने के उद्देश्य से केंद्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा आधुनिक एवं वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। किसानों को अनुदान पर कृषि यंत्र, उन्नत बीज, सिंचाई सुविधाएं तथा विभिन्न कृषि योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे उनके जीवन स्तर एवं आय में निरंतर वृद्धि हो रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के माध्यम से किसानों को आर्थिक संबल प्रदान किया जा रहा है तथा भारत विश्वगुरु बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इस अवसर पर घोरावल विधायक डॉ. अनिल कुमार मौर्य ने भी केंद्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा किसानों के हित में संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए कृषकों से योजनाओं का अधिकाधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष नंदलाल गुप्ता, पूर्व सांसद नरेंद्र कुशवाहा, भाजपा जिला प्रभारी अनिल सिंह, पूर्व जिलाध्यक्ष रमेश मिश्रा, जिला महामंत्री संतोष शुक्ला सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के अंत में ब्लॉक प्रमुख अजीत रावत ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। माननीय प्रभारी मंत्री जी ने कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रगतिशील कृषकों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया तथा विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को बीज किट वितरित किए। कार्यक्रम में उप निदेशक कृषि, जिला कृषि अधिकारी वीरेंद्र कुमार सिंह सहित जनप्रतिनिधिगण, अधिकारीगण एवं बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।

धरना-प्रदर्शन हेतु कलेक्ट्रेट परिसर में निर्धारित किया गया पृथक स्थल/कलेक्ट्रेट के पीछे कोषागार कार्यालय के सामने पश्चिम दिशा में होगा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ द्वारा जनपद में विभिन्न राजनैतिक, अराजनैतिक एवं अन्य संगठनों द्वारा आयोजित किए जाने वाले धरना-प्रदर्शन कार्यक्रमों के सुव्यवस्थित संचालन तथा सुनवाई, फरियादियों के मामलों के निस्तारण तथा अन्य महत्वपूर्ण शासकीय कार्यों के संचालन में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होता है।

इसे दृष्टिगत रखते हुए धरना-प्रदर्शन के लिए कलेक्ट्रेट भवन के पीछे स्थित कोषागार कार्यालय के सामने पश्चिम दिशा की ओर एक निर्धारित स्थल चिन्हित किया गया है।

जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने पुलिस अधीक्षक सहित समस्त संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि जनपद में विभिन्न राजनैतिक, अराजनैतिक एवं अन्य संगठनों द्वारा आयोजित किए जाने वाले धरना-प्रदर्शन कार्यक्रम केवल निर्धारित स्थल पर ही आयोजित कराए जाएं। उन्होंने कहा कि स्थानीय थाना एवं संबंधित पुलिस अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि आवश्यक अग्रेतर कार्यवाही सुनिश्चित करें।

उन्होंने स्पष्ट किया कि यह व्यवस्था तत्काल प्रभाव से लागू होगी तथा इसका कड़ाई से अनुपालन कराया जाएगा। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप जनसुनवाई, प्रशासनिक कार्यों एवं आमजन की सुविधाओं को प्रभावित किए बिना लोकतांत्रिक तरीके से अपनी बात रखने के लिए निर्धारित स्थल का उपयोग सुनिश्चित कराया जाए।

अमीर बनने के लिए अलग तरह के रास्ते अख़्तियार करने पड़तें हैं

अक्सर हम सोचते हैं कि पैसा बचाना ही अमीरी का रास्ता है, लेकिन हकीकत अलग है। हाल ही

में मेरी नजर ब्रिटेन के एक बैंकर टिम टॉबमैन की वेबसाइट 'thecrazyplan.com' पर पड़ी। टिम ने 2024 में इस प्लेटफॉर्म की शुरुआत की थी। उनका दावा रोमांचक है: एक नौसिखिया निवेशक को 'शून्य' से 'अरबपति' बनाने का सफर। यहां 1 अरब डॉलर (करीब 9,400 करोड़ रुपए से अधिक) की बात हो रही है, जो सुनने में शायद नामुमकिन लगे। लेकिन इस वेबसाइट की असली खूबसूरती उनके द्वारा दी जाने वाली वित्तीय शिक्षा में छिपी है। टिम कहते हैं कि दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों में शुमार वॉरेन बफे (95 साल) की संपत्ति 150 अरब डॉलर (करीब 1.42 लाख करोड़ रुपए) से ज्यादा है। लोग बफे की कामयाबी की चर्चा तो करते हैं, लेकिन उन तीन बुनियादी बातों को भूल जाते हैं जिन्होंने उन्हें 'दिग्गज' बनाया...लंबी उम्रः वे 95 वर्ष के हैं और आज भी सक्रिय हैं। निरंतरताः वे पिछले 80 से अधिक वर्षों से निवेश कर रहे हैं। सादगीः वे अपनी कमाई से बहुत कम खर्च करने और अनुशासन के साथ जीने के लिए जाने जाते हैं। टिम का क्रेजी प्लान यह दिखाता है कि कोई भी व्यक्ति अकल्पनीय संपत्ति बना सकता है। उनकी वेबसाइट दो योजनाओं पर टिकी है थली प्लानः हर महीने 50 पाउंड (करीब 6,400 रुपए) की बचत।एकमुश्त प्लानः एक बार में 10,000 पाउंड (करीब 12.8 लाख रुपए) का निवेश। टिम के कैलकुलेशन के अनुसार, लम्प-सम प्लान एक अरब डॉलर तक पहुंचने में 77 साल और मंथली को 86 साल 8 महीने लगेंगे। इस ब्लॉग में बफे के निवेश सिद्धांतों के कई संदर्भ दिए गए हैं।

टिम का कहना है कि बफे ने इस नजरिए से सोचना शुरू किया कि निवेश उनकी परिवार की आने वाली पीढ़ियों के लिए क्या मायने रख सकता है।आमतौर पर एक निवेशक परिवार के लिए 30-40 साल का समय लेकर चलता है, लेकिन यदि इसी समय सीमा को बढ़ाकर 80 साल कर दिया जाए, तो हर कोई बफे बन सकता है। इसे ऐसे समझें:करीब 13 लाख रुपए की राशि 50 साल में बढ़कर 268 करोड़ रुपए हो सकती है, लेकिन वही राशि 80 साल में 18 हजार करोड़ का विशाल फंड बन जाती है।मैनेजमेंट टिपः याद रखिए बचत से आप अमीर नहीं बन सकते और दौलत रातोरात नहीं बन सकती। ये लंबी यात्रा है। अनुशासित निवेश से न केवल भविष्य सुरक्षित करते हैं, बल्कि अगली पीढ़ी के लिए मजबूत नींव भी रखते हैं। (एन. रघुरामन)

धरती पर प्रधूषण को हमने चरम तक पंहुचा दिए,कहीं लाखो पेड़ काटे कहीं टनों कचरा बहाया

नयी दिल्ली। धरती बचाने के 5 उपाय, जो आपके हाथ में हैं,1. पेड़ों को 'गोद' लें : अपने आसपास के पेड़ों की देखभाल करें और हर साल नए पौधे लगाएं। 2. प्लास्टिक से दूरी बनाएं : इस तरह माइक्रो प्लास्टिक

आपकी फूड चेन में जाने से रुकेगा। 3. फूड बैंक की पहल करें : अतिरिक्त भोजन जरूरतमंदों तक पहुंचाएं, अन्न की बर्बादी रोकें। 4. सोलर एनर्जी अपनाएं : फॉसिल फ्यूल की तुलना में सौर ऊर्जा 90फीसदी कम प्रदूषण करती है।

5.लो-फ्लो नल लगाएं : अगर हर परिवार यह अपना ले तो रोज 20 लीटर पानी बचा सकता है। रोज 30 हज़ार हेक्टेयर वन नष्ट-दुनिया में हर दिन लगभग 25,000 से 30,000 हेक्टेयर वन क्षेत्र नष्ट हो जाता है। यानी रोज लगभग 4.1 करोड़ पेड़ काटे जाते हैं। इससे धरती बंजर हो रही है।

इसलिए वातावरण में सीओ2 बढ़ रही है। धरती का औसत तापमान व भीषण बाढ़ की घटनाएं बढ़ रही हैं। हमारे पेट में भी जा रहा है प्लास्टिक-हर दिन लगभग 2,100 ट्रक के बराबर प्लास्टिक समुद्रों में फेंका जाता है।

यह सालाना 1.1 करोड़ टन होता है। यह समुद्री जीवन को नष्ट कर रहा है। इंसान हर हफ्ते 4.1 माइक्रो ग्राम प्लास्टिक खा रहा है। इससे कैंसर जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है।? 1 अरब टन खाना बर्बाद हो रहा है-सालाना 1 अरब टन से अधिक भोजन दुनिया बर्बाद कर रही है। हर दिन लगभग 25-30 लाख टन खाना कचरे में जा रहा है। यह धरती की देन का दुरुपयोग है।

करोड़ों लोग भूखे सो रहे हैं। इस बर्बादी से बनने वाली 'मीथेन गैस' धरती का तापमान बढ़ा रही है। रोज 10 करोड़ टन कार्बन स्टोरेज-मानवीय गतिविधियों के कारण हर दिन वातावरण में औसतन 10 करोड़ टन से अधिक सीओ2 छोड़ी जाती है।

इससे धरती की ओजोन परत नष्ट हो रही है। इसलिए ग्लेशियर पिघल रहे हैं। समुद्र का स्तर बढ़ रहा है। विनाशकारी हीटवेव (लू) चल रही है।

रोज 345 अरब लीटर पानी बह रहा है-हर साल दुनिया में 126 अरब क्यूबिक मीटर साफ पानी बर्बाद होता है। यानी हर दिन लगभग 345 अरब लीटर साफ पानी हम बर्बाद कर रहे हैं।

दुनिया की 25फीसदी आबादी 'वॉटर स्ट्रेस' से जूझ रही है और कई बड़े शहर 'डे जीरो' की ओर बढ़ रहे हैं।

बुक रिव्यू

नागासाकी की विध्वंस कथा-परमाणु हमले के बाद बचे लोगों की कहानी,समझने के लिए पढ़ें ये किताब

नयी दिल्ली। कुछ किताबें ऐसी होती हैं, जिन्हें पढ़ते हुए लगता है कि हम उनकी कहानियों के भीतर खड़े होकर सबकुछ देख रहे हैं। खड़ा कर देती जैसे शिव की जटाएं।' यह एक छोटा-सा विवरण है, लेकिन इसी में उस क्षण की भयावहता दर्ज है। यह किताब ऐसे अनुभव के जरिए परमाणु युद्ध की भयावहता को समझाती है। भावनात्मक गहराई इतनी है कि पाठक खुद उस पीड़ा को महसूस

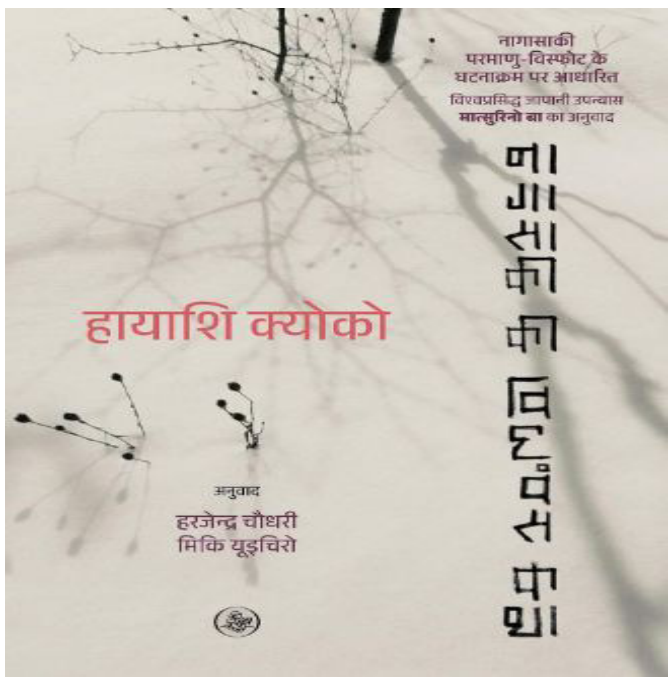

हायाशि क्योको की 'नागासाकी की विध्वंस-कथा' ऐसी ही किताब है। इसे पढ़ते हुए लगता है, जैसे हम 9 अगस्त 1945 के उस भयानक

दिन में चले गए हैं, जब नागासाकी पर परमाणु बम गिराया गया था। यह किताब उस घटना के बाद बची हुई जिंदगियों की कहानी कहती है। किताब में क्या है? 9 अगस्त 1945 को अमेरिका ने नागासाकी पर परमाणु बम गिराया था। उस दिन एक पल में पूरा शहर तबाह हो गया था। लेखिका हायाशि क्योको उस समय 15 साल की थीं और मुनिशन प्लांट में काम कर रही थीं। किताब मुख्य रूप से बम गिरने के तुरंत बाद से लेकर अगले दो महीनों तक की परिस्थितियों पर केंद्रित है। लेखिका खुद उस त्रासदी की साक्षी रही हैं।

इसलिए यह किताब उनकी यादों का संग्रह है। पढ़ते हुए बार-बार ऐसा लगता है, जैसे कोई सर्वाइवर अपनी डायरी के पन्ने धीरे-धीरे खोल रहा है। (परमाणु बम गिरने का क्षण शब्दों में बयान करना मुश्किल है।

न कोई कौंध महसूस हुई, न धमाके का अहसास। 360 मीटर प्रति सेकेंड की रफ्तार वाले झोंके का भी पता नहीं चला। होश आया तो मैं टूटे हुए ढांचे के नीचे पड़ी थी।

'हायाशि क्योको' अपनी किताब 'नागासाकी की विध्वंस - कथा' में) किताब की शालीनता ही है इसकी खासियत-किताब में रेडिएशन सिकनेस, जलन और मरते हुए लोगों की पीड़ा का मार्मिक चित्रण है।

लेखिका इन्हें बिना किसी सनसनी के, बेहद शांत और तथ्यात्मक अंदाज में लिखती हैं। यही बात इस किताब को और प्रभावी बनाती है। किताब की सबसे असरदार बात-इस किताब की सबसे बड़ी ताकत उसकी ईमानदारी और बेहद बारीक डिटेलिंग है। लेखिका एक जगह अपने बालों का जिक्र करते हुए लिखती हैं कि- 'अगर उस दिन मेरे बाल तीन लड़ियों में गुंथे न होते, तो विस्फोट की हवा उन्हें इस तरह छोटे-छोटे ब्योरों से अपनी दुनिया बनाती है। भाषा और लिखने का ढंग-किताब की ये खासियत है कि इसमें भारी-भरकम शब्द इस्तमाल नहीं किए गए हैं। भाषा सरल और सीधी है, इसके बावजूद यह हमारे अंतर्मन में उतरती है।

लेखिका कहीं भी शब्दों के बल से हमें भावुक करने की कोशिश नहीं करतीं, बल्कि उस स्थिति में छोड़ देती हैं, जहां भाव खुद पैदा होते हैं। हिंदी अनुवाद बेहद सहज है। कहीं भी ऐसा नहीं लगता कि अनुवाद पढ़ रहे हैं।

कई जगह लेखिका घटनाओं की बजाय पात्रों के मनोभावों और उनके भीतर चल रहे बदलावों पर जोर देती हैं। ये हिस्से कहानी की रफ्तार को धीमा कर सकते हैं, लेकिन यही किताब को गहराई देते हैं और पाठक पर स्थायी प्रभाव भी छोड़ते हैं। लेखिका कहीं भी खुद को केंद्र में रखकर कहानी को बड़ा नहीं बनातीं।

वे सिर्फ घटनाओं को दर्ज करती हैं और यही सादगी इसे असाधारण बनाती है। किताब के याद रह जाने वाले प्रसंग-किताब के कई प्रसंग गहरी छाप छोड़ जाते हैं।

उदाहरण के लिए- लोग परमाणु-व्याधि (परमामु बम के कारण पनपी बीमारियां) के इलाज के लिए काकि (तेंदू) के पत्तों की अफवाहों पर भरोसा करते हैं। मृतकों को जलाने के लिए अधगीली लकड़ियों का इस्तेमाल करना पड़ता है। मुआवजे के लिए सरकारी दफ्तरों में अपमानजनक और जटिल प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, जिसमें यह साबित करना जरूरी था कि व्यक्ति की मौत परमाणु के दुष्प्रभाव से ही हुई है। सबसे मार्मिक है युद्ध समाप्ति की घोषणा। इस पर लेखिका ने तीखी प्रतिक्रिया दी है कि 'इतनी-सी बात बोलने के लिए इतनी देर क्यों की?' ये प्रसंग दिखाते हैं कि आपदा के बाद लोग भय, भ्रम, उम्मीद, शोक और प्रशासनिक उदासीनता के बीच अपना जीवन कैसे आगे बढ़ाने की कोशिश करते हैं। किताब की खूबियां-यह किताब व्यक्तिगत आंकड़ों तक सीमित नहीं रखती। यह उसे इंसानों के बीच, उनके चेहरे और उनके अनुभवों के साथ सामने लाती है। किताब की कमजोरियां-कुछ पाठकों के लिए यह इमोशनली हैवी और ट्रॉमेटिक हो सकती है।

इसमें बार-बार सफरिंग और मौत के वर्णन आते हैं। इससे पढ़ते-पढ़ते थकान और उदासी महसूस हो सकती है। नैरेशन कई जगह बहुत धीमा और गहरा हो जाता है। अगर आप तेज रफ्तार या प्लॉट ड्रिवेन कहानियां पसंद करते हैं तो यह किताब आपको निराश कर सकती है। यह किताब क्यों पढ़नी चाहिए?हयाशि क्योको की यह किताब इसलिए पढ़नी चाहिए, क्योंकि यह दिखाती है कि कैसे युद्ध केवल रणभूमि तक सीमित नहीं होता।

इसका असर सालों-साल लोगों की जिंदगी पर बना रहता है। युद्ध खत्म होने के बाद भी उसकी पीड़ा लोगों के शरीर, मन और यादों में जीवित रहती है। कई बार ऐसी परिस्थितियां बनती हैं, जो मौत से भी ज्यादा क्रूर साबित होती हैं।

मौजूदा समय में प्रासंगिक है ये किताब-किताब में लगभग 110 पेज हैं, लेकिन इसका प्रभाव गहरा है और लंबे समय तक बना रहता है। इसे पढ़ने के बाद मन में एक सन्नाटा और उदासी रह जाती है। आज जब दुनिया के कई हिस्सों में युद्ध और संघर्ष जारी हैं, यह किताब और भी प्रासंगिक हो जाती है।

यह हमें याद दिलाती है कि किसी भी युद्ध की सबसे बड़ी कीमत आम लोग चुकाते हैं और इससे मिले घाव सालों और पीढ़ियों तक बने रहते हैं। किताब का नाम-नागासाकी की विध्वंस-कथा,(जापानी किताब 'मात्सुरिनो बा' का हिंदी अनुवाद) लेखिका-हायाशि क्योको,अनुवाद- हरजेन्द्र चौधरी, मिकि यूइचिरो।

परीक्षा-प्रणाली पर भरोसे का डगमगाना एक बड़ी त्रासदी है

3 मई को आयोजित नीट-यूजी 2026 परीक्षा (देशभर के सरकारी मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश के लिए केंद्रीय परीक्षा) का पेपर लीक होने के बाद उसे रद्द किया जाना लाखों छात्रों और उनके परिवारों के लिए किसी गहरे आघात से कम नहीं है। इन छात्रों और उनके परिवारों

ने महीनों, बल्कि वर्षों तक अपनी जिंदगी को इस उम्मीद में थाम रखा था कि यह एक परीक्षा उनके लिए बेहतर भविष्य का दरवाजा खोलेगी। हालांकि नई परीक्षा 21 जून को होना तय की गई है, लेकिन इस कैंसलेशन का असर लगातार गहराता जा रहा है। अब तक कम से कम तीन अभ्यर्थी आत्महत्या कर चुके हैं, जबकि हजारों अन्य मानसिक अवसाद से जूझ रहे हैं। उनके सामने फिर से चिंता, अनिश्चितता और कठोर पढ़ाई का एक और दुष्चक्र खड़ा हो गया है। सरकार ने मामले की सीबीआई जांच के आदेश दिए हैं और अब तक नौ लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। यह लीक अब अनेक शहरों में फैले घोटाले का रूप लेता दिख रहा है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने यह कहते हुए परीक्षा रद्द करने को उचित ठहराया कि सरकार नहीं चाहती योग्य छात्रों को तकलीफें उठानी पड़ें। उन्होंने यह भी कहा कि अगले वर्ष से नीट-यूजी पेन-एंड-पेपर प्रणाली के बजाय कंप्यूटर पर ऑनलाइन आयोजित की जाएगी, और जो छात्र री-एग्जाम में शामिल नहीं होना चाहते, उन्हें परीक्षा-फीस लौटाई जाएगी। लेकिन 3 मई को परीक्षा देने वाले अनुमानित 22.05 लाख छात्रों के लिए परीक्षा-शुल्क इतना मायने नहीं रखता। देश की प्रतिस्पर्धी परीक्षा-व्यवस्था छात्रों और उनके परिवारों से कमरतोड़ कीमत वसूलती है। अभी-अभी किशोरावस्था से बाहर आए लड़के-लड़कियों को कोटा, सीकर, प्रयागराज जैसे शहरों की 'कोचिंग फैक्ट्रियों' में भेज दिया जाता है। वे दोस्तों से दूर हो जाते हैं, उनकी दिनचर्या बिगड़ जाती है और वे शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य-समस्याओं से जूझते हैं। वे सफल होने की उम्मीद में घंटों पढ़ाई में जुटे रहते हैं। यह महीनों, कभी-कभी वर्षों तक चलता रहता है और अभ्यर्थी अपने सपनों की परीक्षा पास करने के लिए खुद को टूटने की कगार तक धकेल देते हैं। विशेषकर टियर-2 और टियर-3 शहरों में रहने वाले मध्यमवर्गीय परिवार अपने बच्चों को मेडिकल कॉलेज या किसी आईआईटी में भेजने का सपना पालते हैं और उसके लिए किसी भी त्याग को तैयार रहते हैं। वे इन कोचिंग संस्थानों की फीस और बच्चों के रहने-खाने के खर्च के लिए अपनी जीवनभर की बचत दांव पर लगा देते हैं। अकसर वे अपने दूसरे बच्चों की शादियां टाल देते हैं, घर की मरम्मत का काम रोक देते हैं, यहां तक कि अपना इलाज भी टाल देते हैं, इस उम्मीद में कि उनके बच्चे एक दिन योग्य डॉक्टर, इंजीनियर बनेंगे या कोई प्रतिष्ठित नौकरी हासिल करेंगे। एनटीए की स्थापना 2018 में इस उद्देश्य से की गई थी कि सरकारी संस्थानों में इंजीनियरिंग और मेडिकल जैसे प्रमुख पेशेवर पाठ्यक्रमों की परीक्षाओं का संचालन केंद्रीकृत किया जा सके। एनटीए जिन परीक्षाओं का आयोजन करती है, उनमें आईआईटी के लिए जेईई (मेन), नीट-यूजी, सीयूईटी-यूजी, यूजीसी-नेट और सीएसआईआर-नेट जैसी परीक्षाएं शामिल हैं। लेकिन पेपर लीक और परीक्षाओं के रद्द होने से जुड़े विवादों ने उसके रिकॉर्ड को लगातार दागदार किया है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2024 में संसद को दिए आंकड़ों के अनुसार यद्यपि एनटीए ने 240 परीक्षाएं सफलतापूर्वक आयोजित कीं, लेकिन उसी अवधि तक उसे प्रतिष्ठित पदों और प्रवेशों से जुड़ी कम से कम 16 महत्वपूर्ण परीक्षाएं स्थगित भी करनी पड़ी थीं। 2025 में शिक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति ने पाया कि 2024-25 की अवधि में एनटीए द्वारा आयोजित 14 प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में से कम-से-कम पांच को पेपर लीक और परिणामों के संकलन में त्रुटियों जैसी गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ा। उदाहरण के लिए, जेईई (मेन) 2025 में अंतिम उत्तर-कुंजी में पाई गई गलतियों के कारण 12 प्रश्नों को वापस लेना पड़ा था। सबसे गंभीर बात यह है कि यह पहली बार नहीं है जब नीट-यूजी किसी घोटाले में घिरी हो। 2024 में भी पेपर लीक हुआ था। उस वर्ष मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा था, जिसने यह तो माना था कि पेपर लीक हुआ था, लेकिन यह कहते हुए परीक्षा रद्द करने से इनकार कर दिया कि री-एग्जाम छात्रों पर अत्यधिक बोझ डालेगा। शिक्षा मंत्रालय को इस प्रश्न का उत्तर देना चाहिए कि आखिर पेपर लीक और अन्य समस्याएं लगातार एनटीए का पीछा क्यों कर रही हैं? एनटीए द्वारा आयोजित नहीं की जाने वाली परीक्षाएं- जैसे सीबीएसई और यूपीएससी की परीक्षाएं तो अमूमन इन समस्याओं से अछूती रहती हैं। उस परीक्षा-व्यवस्था की विश्वसनीयता को बड़ा आघात लगा है, जिसे युवाओं को समान अवसर देने वाली पारदर्शी प्रणाली होना चाहिए। लोग कब तक ऐसी एजेंसी पर भरोसा करते रहेंगे, जिसने बार-बार उन्हें निराश किया है? (ये लेखिका के अपने विचार हैं,आरती जेरथ)

बचपन से ही पढ़ने की आदत डालें तो जीवन बदल जाता है

अधिकांश पैरेंट्स बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें यह नहीं पता होता कि इसकी शुरुआत कैसे करें। वे स्क्रीन के खिलाफ लड़ाई भी हार जाते हैं। यह दोहरी मार है! आज नेशनल रीडिंग डे के मौके पर, आइए इससे निपटने के तरीके जानते हैं। हर पैरेंट को यह जानना चाहिए कि बच्चे का स्वस्थ विकास स्लो-डोपामिन पर निर्भर करता है। बच्चा एक लक्ष्य तय करता है, उसके लिए संघर्ष करता है, उसमें नाकाम होता है लेकिन प्रयास जारी रखता है और अंततः सफल होता है। इससे मिलने वाला न्यूरोकेमिकल रिवॉर्ड हताशा सहने की क्षमता और काम करने की प्रेरणा रचता है। टचस्क्रीन डिवाइस इसके बिल्कुल विपरीत करती हैं : हर 8 सेकंड में फास्ट-डोपामिन का चक्र। ऐसे में स्क्रीन पर पले-बढ़े बच्चे लंबे समय तक प्रयास जारी रखने के लिए जरूरी मस्तिष्क की संरचनाओं को विकसित नहीं कर पाते। इसका खामियाजा 2 से 9 वर्ष की उम्र के महत्वपूर्ण चरण में प्रीफ्रंटल डेवलपमेंट में मापी जा सकने वाली कमी के रूप में दिखाई देता है। खेल, बातचीत की क्षमताएं और बच्चे

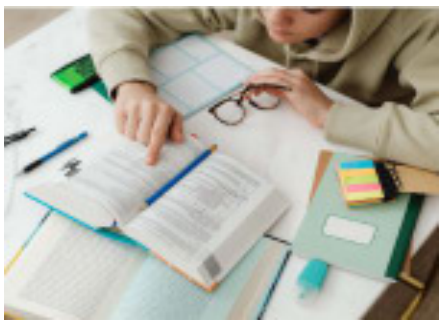

में रीडिंग की आदत विकसित करने जैसी गतिविधियों के माध्यम से इसे बदलने का अवसर जन्म से ही शुरू हो जाता है। जन्म से 3 वर्ष तक की उम्र के लिए : जब आप किसी शिशु को जोर से पढ़कर कुछ सुनाते हैं, तो आपकी आवाज की लय और उसका उतार-चढ़ाव बच्चे के न्यूरल मूवमेंट्स के साथ तालमेल बिठाने लगते हैं। इसे एंट्रेनमेंट कहते हैं। वैज्ञानिक शोधों में पाया गया है कि किसी शिशु से धीमी और लयबद्ध शैली में की जाने वाली बातचीत सात महीने तक के बच्चों में स्पीच की कॉर्टिकल ट्रैकिंग को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाती है। उनका मस्तिष्क आपकी आवाज से तालमेल बैठा रहा होता है और उसी से भाषा की संरचना सीखता है।ऐसे में बच्चे के जन्म के बाद पहले कुछ हफ्तों से ही रोज पढ़ें। ऐसी किताबें चुनें जिनमें स्पष्ट लय और दोहराव हो (बाल कविताएं, दोहराए जाने वाले अंशों वाली सरल कहानियां)। गति धीमी रखें। भाव-भंगिमा को उभारें। याद रखें कि शब्दों से ज्यादा यह मायने रखता है कि आप उन्हें 'कैसे' पढ़ते हैं। अभी आप बच्चे को शब्दावली नहीं सिखा रहे हैं; उसके मस्तिष्क को ध्वनि के पैटर्न को समझने की क्षमता के लिए तैयार कर रहे हैं-इसी से पढ़ने की क्षमता विकसित होती है। 3 से 6 वर्ष तक की उम्र के लिए : जैसे-जैसे बच्चे स्कूल जाने की उम्र के करीब पहुंचते हैं, सोने से पहले कुछ पढ़कर सुनाना माता-पिता द्वारा किए जा सकने वाले सबसे प्रभावशाली कार्यों में से एक बन जाता है। जब शरीर नींद की ओर बढ़ता है, तो मस्तिष्क थीटा तरंगों की अवस्था में प्रवेश करता है। ये कल्पना, भावनात्मक स्मृति और रचनात्मक जुड़ाव से जुड़ी होती हैं। नींद की दहलीज पर आत्मसात की गई कहानियां स्मृति में दर्ज होने की अधिक संभावना रखती हैं। सोने से पहले सुनाई जाने वाली कहानी केवल भावनात्मक जुड़ाव नहीं है। यह एक रणनीति है। पैरेंट्स सोने से पहले पढ़ने की आदत को अनिवार्य बनाएं। गर्मजोशी और बिना जल्दबाजी के धीमी गति से पढ़ें। ऐसी कहानियां चुनें, जिनमें भावनात्मक जटिलता हो। ऐसे पात्र जो दुविधाओं का सामना करते हैं, डर महसूस करते हैं, आश्चर्य का अनुभव करते हैं। बच्चे को सवाल पूछने दें और कहानी में ठहरने दें। यही वह समय होता है जब मस्तिष्क सबसे अधिक ग्रहणशील होता है। 6 से 10 वर्ष तक की उम्र के लिए : जब कोई बच्चा किसी पन्ने पर लिखे शब्दों को सक्रिय रूप से समझकर पढ़ता है, तो उसके मस्तिष्क में बीटा तरंगों का प्रभुत्व होता है।

राहुल गांधी का 'छात्रों की गूंज' हस्ताक्षर अभियान,बोले- पेपर लीक, और बेरोजगारी पर छात्रों की बुलंद आवाज सरकार तक पहुंचाएंगे

नई दिल्ली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने को 'छात्रों की गूंज' नाम से देशव्यापी हस्ताक्षर अभियान शुरू किया। उन्होंने गुरुवार को कहा कि यह अभियान

पेपर लीक, परीक्षा में गड़बड़ियां, महंगी शिक्षा और बेरोजगारी जैसे मुद्दों को सरकार तक पहुंचाने का मंच बनेगा। राहुल ने छात्रों से अभियान से जुड़ने, अपने सुझाव देने और याचिका पर हस्ताक्षर करने की अपील की। राहुल गांधी ने एक्स पोस्ट में अभियान का लिंक शेयर किया। लिखा कि जिन छात्रों के सपने पेपर लीक, परीक्षा संबंधी समस्याओं या बढ़ती फीस की वजह से प्रभावित हुए हैं, उनके लिए यह अभियान एक आवाज बनेगा। उन्होंने कहा कि ज्यादा से ज्यादा छात्र इसमें शामिल होंगे तो उनकी मांगें उतनी ही मजबूती से सरकार तक पहुंचेंगी। राहुल गांधी ने वीडियो मैसेज में कहा- कोटा में आयोजित 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम को देशभर के छात्रों का जबरदस्त समर्थन मिला। लाखों युवाओं ने शिक्षा व्यवस्था पर उनकी प्रेजेंटेशन देखी और अपने विचार साझा किए। शिक्षा का बढ़ता खर्च सबसे बड़ी चिंता- राहुल गांधी ने कहा कि शिक्षा का लगातार बढ़ता खर्च देश के लाखों परिवारों के लिए बड़ी समस्या बन गया है। लाखों परिवार अपने बच्चों को नीट जैसी परीक्षाओं की तैयारी कराने में भारी रकम खर्च कर रहे हैं। यह स्थिति चिंता का विषय है और इस पर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा, रोजगार और परीक्षा प्रणाली से जुड़े मुद्दे किसी एक राजनीतिक दल के नहीं, बल्कि पूरे देश के मुद्दे हैं। इसलिए छात्रों को खुलकर अपने अनुभव और सुझाव सामने रखने चाहिए। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने दावा किया कि हर साल नीट परीक्षा देने वाले 22 लाख छात्र और उनके परिवार से सिस्टम के जरिए रु1.32 लाख करोड़ खर्च कराए जाते हैं। यह रकम देश के पूरे शिक्षा बजट रु1.40 लाख करोड़ के लगभग बराबर है। प्रियंका गांधी ने बुधवार रात एक्स पोस्ट में ये भी लिखा- मैं एक बात और जोड़ना चाहती हूं कि भारत सरकार ने अपने पसंदीदा कारोबारियों के जो लोन माफ किए, वे 16 लाख करोड़ रुपए हैं। प्रियंका की यह टिप्पणी राहुल गांधी के कोटा दौरे के बाद आई। राहुल ने बुधवार को 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम के तहत छात्रों से बातचीत में शिक्षा व्यवस्था में बढ़ते दबावों पर चर्चा की थी। राहुल ने कहा- भारत की पांच बड़ी परीक्षाओं- नीट, जेई , एसएससी, यूपीएससी और आरआरबी की तैयारी में छात्र और उनके परिवार हर साल रु3.5 लाख करोड़ खर्च करते हैं। राहुल गांधी ने 17 जून को कोटा के दशहरा मैदान में 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम में सैकड़ों छात्रों से चर्चा की थी। उन्होंने कहा था कि हिंदुस्तान का एजुकेशन सिस्टम अपने बच्चों को प्रेशराइज करता है। यह उन्हें स्ट्रेस (तनाव) देता है। मैं चाहता हूं कि हम सब मिलकर इसके खिलाफ लड़ाई लड़ें, ताकि आगे से किसी भी बच्चे को ऐसा (आत्महत्या जैसा) आत्मघाती कदम न उठाना पड़े। राहुल गांधी ने कहा कि पांच प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में आपके परिवारों की जेब से उतना पैसा छीन लिया जाता है, जितना पांच मंत्रालयों का बजट है। नीट, जेई सहित 5 परीक्षाओं की तैयारी पर परिवारों की जेब से 5 लाख करोड़ चले जाते हैं। 18 जून: प्रियंका का आरोप- नीट स्टूडेंट्स से रु1.32 लाख करोड़ वसूले-कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने दावा किया कि हर साल नीट परीक्षा देने वाले 22 लाख छात्र और उनके परिवार से सिस्टम के जरिए रु1.32 लाख करोड़ खर्च कराए जाते हैं। यह रकम देश के पूरे शिक्षा बजट रु1.40 लाख करोड़ के लगभग बराबर है। प्रियंका गांधी ने एक्स पोस्ट में ये भी लिखा- मैं एक बात और जोड़ना चाहती हूं कि भारत सरकार ने अपने पसंदीदा कारोबारियों के जो लोन माफ किए, वे 16 लाख करोड़ रुपए हैं। 21 जून को होगा री-एग्जाम-नीट-यूजी 2026 की दोबारा परीक्षा 21 जून को आयोजित की जाएगी। री-एग्जाम एक ही शिफ्ट में दोपहर 2 बजे से शाम 5:15 बजे तक आयोजित होगा। प्रशासनिक प्रक्रियाओं के लिए छात्रों को अतिरिक्त 15 मिनट का समय भी दिया जाएगा। एनटीए के मुताबिक, दोबारा होने वाली इस परीक्षा में बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों के शामिल होने की उम्मीद है। 12 जून: रीएग?जाम 3:15 घंटे का होगा, 4 रफ वर्क शीट मिलेंगीएनटीए ने नीट-यूजी रीएग्जाम में कुछ बदलाव किए हैं। 12 जून को जारी नई गाइडलाइंस के मुताबिक, परीक्षा का समय अब 180 मिनट से बढ़ाकर 195 मिनट कर दिया गया है। इसके अलावा आंसर शीट में रफ वर्क के लिए भी जगह बढ़ाई गई है।

ईरान डील पर टिका अमेरिकी उपराष्ट्रपति वेंस का फ्यूचर,जंग रुकी तो 2028 में राष्ट्रपति बनने के सबसे बड़े दावेदार, फेल हुई तो करियर बरबाद

वॉशिंगटन डीसी।अपनी राजनीतिक उपलब्धियों के बजाय अपनी आस्था और धर्म (ईसाई धर्म और कैथोलिक बनने के सफर) पर

किताब लिखकर वे खुद को 2028 के चुनाव से पहले देश के सामने एक बेहद गंभीर, ईमानदार और पारिवारिक व्यक्ति के रूप में पेश कर रहे हैं। वेंस 2019 में नास्तिकता छोड़कर कैथोलिक ईसाई बने थे। इस किताब के जरिए वे रिपब्लिकन पार्टी (जीओपी) के पारंपरिक और धार्मिक आधार को मजबूत कर रहे हैं। 2028 के प्राइमरी चुनावों (पार्टी के भीतर उम्मीदवार चुनने की रेस) में यह धार्मिक कार्ड उन्हें अन्य रिपब्लिकन दावेदारों (जैसे मार्को रूबियो) के मुकाबले मजबूत बढ़त दिला सकता है। मार्को रूबियो 2028 के राष्ट्रपति पद के दावेदार माने जाते हैं-विदेश मंत्री मार्को रूबियो को 2028 के रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद की दौड़ का संभावित दावेदार माना जाता है। अमेरिका ने जनवरी में बिना किसी बड़े सैन्य खर्च या अमेरिकी सैनिकों की जान जोखिम में डाले वेनेजुएला के तानाशाह निकोलस मादुरो को सत्ता से बेदखल करने में कामयाबी हासिल की थी। उनकी निगरानी में ही इस पूरे ऑपरेशन को अंजाम दिया गया था ऐसे में इस पूरे मामले का क्रेडिट मार्को रूबियो को मिला। इस घटना ने उन्हें रिपब्लिकन वोटर्स के बीच एक 'एक्शन-ओरिएंटेड' लीडर बना दिया। मार्को रूबियो की सबसे बड़ी यूएसपी यह है कि वे पार्टी के भीतर दो विरोधी विचारधाराओं (पारंपरिक रिपब्लिकन वोटर्स और ट्रम्प की अमेरिका फर्स्ट समर्थक वोटर्स) को एक साथ जोड़ सकते हैं। ज्यादातर सर्वे में वेंस को बढ़त, रूबियो कड़ी टक्कर दे रहे-दुनिया के सबसे बड़े प्रेडिक्शन मार्केट पॉलिमार्केट के मुताबिक रूबियो सर्वे में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। साल 2026 की शुरुआत में रूबियो सिंगल डिजिट पर थे। जून 2026 की ताजा ट्रेडिंग के मुताबिक, रिपब्लिकन उम्मीदवार बनने की रेस में मार्को रूबियो के शेयर बढ़कर 30फीसदी के ऑल-टाइम हाई पर पहुंच गए हैं। हालांकि इस प्लेटफॉर्म पर वेंस अभी भी 33फीसदी के साथ मामूली बढ़त बनाए हुए हैं। वहीं, प्रेडिक्शन मार्केट कालशी के मुताबिक मार्को रूबियो 18फीसदी की संभावना के साथ पहले स्थान पर आ गए हैं। उपराष्ट्रपति जेडी वेंस 17फीसदी के साथ दूसरे और डेमोक्रेट गेविन न्यूसम 16फीसदी के साथ तीसरे स्थान पर खिसक चुके हैं।एक तीसरी सर्वे एजेंसी एमरसन कॉलेज पोल के मुताबिक मई 2026 में वेंस और रूबियो दोनों ही 35फीसदी के साथ बराबरी पर थे। जबकि फरवरी में यह आंकड़ा वेंस (52फीसदी) और रूबियो (20फीसदी) था। वेंस को बड़े राजनीतिक नुकसान की आशंका-कुछ रिपब्लिकन नेताओं का मानना है कि ईरान से जुड़े इस समझौते की जिम्मेदारी वेंस के लिए एक ऐसा काम बन गई है, जिसमें मेहनत तो ज्यादा है लेकिन राजनीतिक फायदा कम। नाम न बताने की शर्त पर एक सूत्र ने बीबीसी से कहा, जेडी वेंस पर जिम्मेदारी डाल देना ट्रम्प की पुरानी आदत रही है। वहीं, दूसरे सूत्र ने कहा, अगर कोई विवाद खड़ा हो जाए तो जेडी वेंस को आगे कर देना ट्रम्प के लिए कोई नई बात नहीं है। अमेरिकी अखबार द वॉशिंगटन पोस्ट के मुताबिक ईरान के साथ हुआ यह ऐतिहासिक समझौता जेडी वेंस के राजनीतिक करियर के लिए एक दोधारी तलवार बन चुका है। अखबार के मुताबिक वेंस इस समय भले ही व्हाइट हाउस के सबसे शक्तिशाली संकटमोचक दिख रहे हों, लेकिन वे वास्तव में एक राजनीतिक चक्रव्यूह में फंस चुके हैं। 2028 के राष्ट्रपति चुनाव की रेस में खुद को बनाए रखने के लिए वेंस को हर हाल में अगले 60 दिनों (स्विट्जरलैंड वार्ता) में इस ईरान डील को बिना किसी विवाद के सफल बनाना ही होगा, वरना उनका 'प्रेसिडेंशियल ड्रीम' यहीं दफन हो सकता है।

राज्यसभा चुनाव- झारखंड में क्रॉस वोटिंग, कांग्रेस उम्मीदवार की हार,भाजपा समर्थित उद्योगपति नाथवानी जीते

नयी दिल्ली। 12 राज्यों की 26 राज्यसभा सीटों के लिए गुरुवार को चुनाव प्रक्रिया पूरी हो गई। इनमें से 19 सीटें एनडीए को, इंडिया ब्लॉक को 6 और एक सीट

मिजोरम की जोराम पीपुल्स मूवमेंट (ज़ेडपीएम) को मिली। इस चुनाव में एनडीए और इंडिया ब्लॉक को एक-एक सीट का फायदा हुआ। 23 सीटों पर उम्मीदवार निर्विरोध चुने गए। गुरुवार को झारखंड की 2 और मिजोरम की एक राज्यसभा सीटों के रिजल्ट आए। झारखंड में एक सीट एनडीए समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार उद्योगपति परिमल नाथवानी और दूसरी झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के उम्मीदवार बैद्यनाथ राम ने जीती। झारखंड में क्रॉस वोटिंग की वजह से परिमल को जीत मिली। यहां 3 वोट अवैध पड़े। कांग्रेस ने आरजेडी और लेफ्ट पर साथ ना देने का आरोप लगाया। वहीं, मिजोरम की एक सीट पर जोराम पीपुल्स मूवमेंट (ज़ेडपीएम) प्रत्याशी के. लल्टलुआंगकिमा जीते। आरजेडी और सीपीआई ने कहा- कांग्रेस के आरोप झूठे-सीपीआई (एमएल) के महासचिव दीपंकर भट्टाचार्य ने कांग्रेस नेता के. राजू के आरोपों को नकार दिया। उन्होंने कहा कि माले के दोनों विधायकों ने कांग्रेस प्रत्याशी को वोट दिया है। क्रॉस वोटिंग की बात पूरी तरह से गलत है। हमने गठबंधन धर्म का पूरी तरह से पालन किया है। आरजेडी के केंद्रीय महासचिव भोला यादव ने कहा कि राजू की भाषा दुखद है। मैं वहां एजेंट था। मेरे सामने चार विधायकों ने दिखाकर वोट दिया है। बिना किसी जांच के राजू जैसे नेता कहते हैं कि आरजेडी ने धोखा दिया है। हमें नहीं लगता कि सांप्रदायिक ताकतों के साथ हाथ मिला सकते हैं। झारखंड में कैसे हुई वोटिंग, पूरा गणित समझें- झारखंड में 81 विधायक हैं। राज्यसभा की एक सीट जीतने के लिए 28 विधायकों के समर्थन की जरूरत होती है। अभी की मौजूदा स्थिति में एनडीए के 24, जेएमएम-कांग्रेस के गठबंधन के 56 और जेकेएलएम का एक विधायक है। 26 में से 23 सीटों पर निर्विरोध उम्मीदवार जीते-10 राज्यों की 24 राज्यसभा सीटों पर कार्यकाल पूरा होने के बाद चुनाव हुए। इनमें से 8 राज्यों की 21 सीटों पर प्रत्याशी निर्विरोध जीते, जबकि 2 राज्य (झारखंड और मिजोरम) की 3 सीटों पर उम्मीदवार ज्यादा होने की वजह से चुनाव हुए। वहीं, महाराष्ट्र और तमिलनाडु की एक-एक सीट पर उपचुनाव हुए, इनमें भी प्रत्याशी निर्विरोध चुने गए। मिजोरम की सत्तारूढ़ जोराम पीपुल्स मूवमेंट (ज़ेडपीएम) का कोई सांसद पहली बार राज्यसभा पहुंचा है। के लल्टलुआंगकिमा ने राज्य की एकमात्र राज्यसभा सीट जीत ली है। लल्टलुआंगकिमा को 36 में से 26 वोट मिले, जबकि विपक्षी मिजो नेशनल फ्रंट (एमएनएफ) की उम्मीदवार जोथानसांगी हमार को 10 वोट मिले।भाजपा के दो और कांग्रेस के एक विधायक ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया, जबकि ज़ेडपीएम के एक विधायक स्वास्थ्य कारणों से वोट नहीं डाल सके। 2017 में बनी ज़ेडपीएम के लिए यह बड़ी उपलब्धि है। लल्टलुआंगकिमा पार्टी के पहले राज्यसभा सांसद बने हैं। वह 1972 के बाद राज्यसभा पहुंचने वाले मिजोरम के आठवें नेता हैं। राज्य में विधानसभा की 40 सीटें हैं। राज्यसभा में एनडीए को बहुमत से 29 सीटें ज्यादा-राज्यसभा में एनडीए के पास 151 सीटें हो गईं हैं, जो बहुमत से 29 ज्यादा हैं। वहीं इंडिया ब्लॉक के खाते में सिर्फ 65 सीटे हैं। अन्य के खाते में 26 सीटे हैं। टीएमसी में फूट के बाद तीन राज्यसभा सांसद इस्तीफा दे चुके हैं। जिससे सदन में 3 सीटें खाली हो गईं हैं।

मोदी ने पेरिस में कहा- आज फ्रांस में जितने घर, उससे ज्यादा हमने जरूरतमंदों को दिए-हमने 25 करोड़ भारतीय गरीबी से बाहर निकाले

पेरिस/नई दिल्ली। यानी एक ऐसी प्रगति, जिसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है।

फ्रांस में आज जितने कुल घर हैं, उससे ज्यादा घर हमने भारत में जरूरतमंद लोगों को लिए बनाए हैं। इन 12 सालों की उपलब्धियों में एक उपलब्धि ऐसी भी है, जिसे अंकों से नहीं मापा जा सकता। वह है 140 करोड़ भारतीयों का आत्मविश्वास। आज का भारत का युवा बहुत बड़े सपने देख रहा है। भारत का किसान नई संभावनाओं के साथ आगे बढ़ रहा है। महिलाएं-किसान टेक्नोलॉजी से सशक्तः एक समय था, जब दूरदराज के गांवों तक आधुनिक सुविधाएं पहुंचाना वाकई बहुत मुश्किल था। आज उन्हीं गावों में मोबाइल, बिजली और इंटरनेट सुविधाओं की पूरी दुनिया है। हमारे किसान, मछुआरों, डेयरी फार्मर्स, महिलाएं, स्टूडेंट्स सभी टेक्नोलॉजी के माध्यम से सशक्त हो रहे हैं। अपने लिए नए अवसर बना रहे हैं। भारत को अब नेक्स्ट लेवल पर ले जाना हैः इन उपलब्धियों की विशेषताएं ये हैं कि कुछ समय पहले तक यह नामुमकिन लगती है। आज भारत के लोग अपने जीवन को भी नेक्स्ट लेवल पर ले जाना चाहते है। और भारत को भी नेक्स्ट लेवल पर ले जाना उनका मकसद, सपना और संकल्प है। यही एस्पेरेशन आज भारत की सबसे बड़ी शक्ति है।पीएम विवाटेक समिट में भी शामिल हुए, कहा- फ्रांस पुल की तरह काम करता है-इससे पहले पीएम गुरुवार शाम (भारतीय समयानुसार) पेरिस में आयोजित विवाटेक समिट में शामिल हुए थे। मोदी ने कहा- फ्रांस एक अहम पुल का काम कर रहा है जो भारत और यूरोप के टेक इकोसिस्टम को करीब ला रहा है।हमारे यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) की वजह से आज दुनिया के आधे रियल-टाइम डिजिटल ट्रांजैक्शन भारत में होते हैं। अब आप फ्रांस में भी एफिल टॉवर या पेरिस एयरपोर्ट पर यूपीआई का इस्तेमाल कर सकते हैं। हमारे पास ऐसे कई वर्ल्ड-क्लास डिजिटल पब्लिक गुड्स के उदाहरण हैं। डिजिलॉकर दुनिया के सबसे बड़े डिजिटल डॉक्यूमेंट वॉलेट में से एक है। मोदी की स्पीच, 4 बड़ी बातें; कहा- भारत में बदलाव की वजह टेक्नोलॉजी-भारत के पास दुनिया का सबसे बड़ा डिजिटल आइडेंटिटी सिस्टमः पिछले दशक में, भारत तेजी से बदल रहा है और इस बदलाव के पीछे टेक्नोलॉजी की बड़ी भूमिका है। दुनिया का सबसे बड़ा डिजिटल आइडेंटिटी सिस्टम बनाने से लेकर दुनिया के सबसे बड़े डिजिटल पेमेंट प्लेटफॉर्म तक, हम फाइनेंशियल इन्क्लूजन, शिक्षा, टेलीमेडिसिन, खेती और कई अन्य क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर रहे हैं। 2026 भारत और यूरोप के लिए एक खास साल हैः साल की शुरुआत में, हमने ऐतिहासिक भारत-ईयू फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पूरा किया। यह एग्रीमेंट हमारे व्यापार और निवेश को बढ़ाएगा। इस साल 'भारत-फ्रांस इनोवेशन ईयर' की शुरुआत के साथ, फ्रांस एक अहम पुल का काम कर रहा है जो भारत और यूरोप के टेक इकोसिस्टम को करीब ला रहा है। भारत के पास दुनिया का सबसे बड़ा टैलेंट पूलः भारत एक खुला समाज है और दुनिया का सबसे बड़ा टैलेंट पूल है। हम नियमों को आसान बना रहे हैं और 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' सुनिश्चित कर रहे हैं। इनोवेशन से लेकर कमर्शियलाइजेशन तक, हम 50 बिलियन डॉलर से ज्यादा के खास इंसेंटिव के जरिए प्राइवेट कंपनियों को सपोर्ट कर रहे हैं। भारत में दुनिया में सबसे सस्ता डेटा उपलब्ध हैः हम दुनिया का सबसे सस्ता डेटा और कम लागत वाली ग्रीन एनर्जी भी उपलब्ध करा रहे हैं। हमारा नजरिया साफ है। हमारी सरकार सुविधा देगी और इंडस्ट्री इनोवेशन करेगी। स्टार्टअप्स बड़े बदलाव लाएंगे और ग्लोबल पार्टनर हमारे साथ मिलकर आगे बढ़ेंगे। यूरोप का बड़ा तकनीकी सम्मेलन है विवाटेक-विवाटेक यूरोप का बड़ा तकनीकी सम्मेलन है, जहां दुनियाभर की नई इंडस्ट्रीज, टेक्निक कंपनियां, इंवेस्टर और एक्सपर्ट नई टेक्निक और इनोवेशन का डिस्प्ले करते हैं। मुख्य तौर पर आर्टिफिशिअल इंटेलिजेंस (एआई), स्टार्टअप और उद्यमिता, डिजिटल प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा, हरित प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स, भविष्य की उभरती तकनीकों पर उन पर चर्चा करते हैं। यहां भारत का राष्ट्रीय मंडप (इंडिया पैवेलियन) भी स्थापित किया गया है, जहां देश के स्टार्टअप और तकनीकी उपलब्धियों का प्रदर्शन किया जा रहा है। दरअसल, पीएम मोदी की 6 दिन फ्रांस और स्लोवाकिया यात्रा का आज अंतिम दिन है। मोदी 13-14 जून तक फ्रांस के नीस शहर में थे। इसके बाद 14 से 16 तक स्लोवाकिया में रहे। वहां से लौटकर एवियन में जी7 समिट में शामिल हुए। 17 जूनः पीएम जी7 समिट में शामिल हुए, ट्रम्प से मीटिंग की-मोदी फ्रांस के एवियन शहर में आयोजित 52वें जी7 समिट में शामिल हुए थे। उनकी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से 18 मिनट द्विपक्षीय बातचीत हुई। ट्रम्प ने वादा किया है कि मोदी के रहते कभी भारत पर हमला होता है तो अमेरिका मदद के लिए साथ खड़ा होगा। मोदी के अलावा कोई और नेता भारत में होगा तो मुझे सोचना पड़ेगा।

ईरान जंग तो रुकी, लेकिन होर्मुज खुलना अब भी टेढ़ी खीर, भारत में पेट्रोल-डीजल कबतक सस्ता होगा

तेहरान। सवाल-1: होर्मुज स्ट्रेट खोलने पर अमेरिका-ईरान समझौते में क्या लिखा है? जवाबः अमेरिका और ईरान की 14 पॉइंट वाली डील में कहा गया है कि होर्मुज स्ट्रेट को फिर से खोला जाएगा। इसमें 3 जरूरी बातें कही गई हैं। 'समझौता होते ही ईरान तय करेगा कि अगले 60 दिनों तक होर्मुज से आने-जाने वाले जहाज सुरक्षित तरीके से और बिना किसी शुल्क के गुजरें। जहाजों की आवाजाही तुरंत शुरू कर दी जाएगी। हालांकि जंग के चलते पैदा हुई सैन्य रुकावटों को हटाने और समुद्र में बिछी बारूदी सुरंगों को साफ करने में 30 दिन तक लग सकते हैं। ईरान, ओमान के साथ मिलकर यह भी तय करेगा कि आगे होर्मुज स्ट्रेट का संचालन कैसे होगा।' दरअसल, 28 फरवरी को हमले के बाद ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट ब्लॉक कर दिया था। जहाजों की आवाजाही लगभग पूरी तरह बंद हो गई। ईरान की रजामंदी से कुछ शिप्स निकल रहे थे, लेकिन 13 अप्रैल से अमेरिकी नेवी ने दोहरी नाकेबंदी कर दी थी। सवाल-2: होर्मुज पूरी तरह खुलने में अड़चनें क्या हैं? जवाबः अमेरिका-ईरान की डील में भले होर्मुज तुरंत खोलने की बात है, लेकिन इसमें 4 बड़ी अड़चनें हैं-1. बारूदी सुरंगें और तकनीकी रुकावटें-इस संकरे समुद्री रास्ते से दुनिया का करीब 20फीसदी कच्चा तेल गुजरता है। अपने सबसे संकरे हिस्से में ये सिर्फ 33 किलोमीटर चौड़ा है।जंग के दौरान ईरानी सेना ने होर्मुज में बारूदी सुरंगें बिछाई थीं। कई रिपोर्ट्स के मुताबिक, इनकी सटीक लोकेशन उसे खुद नहीं पता है, क्योंकि ज्यादा समय में ये माइंस अपनी जगह से डिस्प्लेस हो जाती हैं। 11 अप्रैल से अमेरिका ने ओमान की खाड़ी में माइन-क्लीयरेंस ऑपरेशन शुरू किया था। अमेरिका का अनुमान है कि इन माइंस को पूरी तरह हटाने में 6 महीने लग सकते हैं। उसके पहले तक कमर्शियल जहाजों के लिए यहां से निकलना खतरे से खाली नहीं है। अभी लगभग 2,000 जहाजों पर 20,000 नाविक होर्मुज से गुजरने के इंतजार में फंसे हुए हैं। डेनमार्क के जेस्के बैंक के सीनियर एनालिस्ट हैदर अंजुम कहते हैं, 'होर्मुज खुलने के बावजूद सबसे बड़ा खतरा माइंस का है। माइंस को साफ करके जहाजों के लिए एक सेफ गलियारा बनाने में करीब 2 महीने लग जाएंगे।'2. सिर्फ 60 दिनों तक मुफ्त आवाजाही, फिर टोल- जंग के पहले होर्मुज रूट फ्री था। यहां से आने-जाने के लिए कोई ट्रांजिट फीस नहीं देनी पड़ती थी।ट्रम्प की डील के तहत जहाजों से 60 दिन तक कोई टोल नहीं वसूला जाएगा। ईरान का कहना है कि वो उसके बाद जहाजों को सुरक्षित गुजारने के लिए फीस वसूलेगा। आगे चलकर होर्मुज के मैनेजमेंट के लिए ईरान, ओमान के साथ एक बड़ा समझौता करेगा। दरअसल, ईरान होर्मुज पर वैसा ही कंट्रोल चाहता है जैसा तुर्किये स्ट्रेट पर तुर्किये का है। 1936 के मोंट्रेक्स कन्वेंशन के तहत तुर्किये, बोस्फोरस और डार्डानेल्स स्ट्रेट (तुर्किये स्ट्रेट) पर कंट्रोल करता है और यहां से गुजरने वाले जहाजों से टोल लेता है। ईरान का भी कहना है कि होर्मुज अंतर्राष्ट्रीय समुद्री क्षेत्र में नहीं है, इसलिए उसे इसका अधिकार है। ईरानी-अमेरिकी अर्थशास्त्री नादेर हबीबी कहते हैं, 'अमेरिका, ईरान को

कोई फीस वसूलने की अनुमति नहीं देगा। जो जहाज ईरान को टोल देंगे, वो उन पर बैन लगा सकता है।' 3. जहाजों के बीमे के रेट्स अभी भी ज्यादा-कमर्शियल जहाजों के साथ हादसे का खतरा रहता है। इसलिए ये तभी ऑपरेट करते हैं, जब इनका इंश्योरेंस हो। इनमें मौजूद करोड़ों के कार्गो का भी बीमा होता है। हालांकि कमर्शियल जहाजों का बीमा करने वाली कंपनियां जंग के दौरान कवरेज नहीं देती हैं या फिर इसका प्रीमियम बहुत बढ़ा देती हैं। ऐसा ही ईरान जंग के दौरान होर्मुज में फंसे जहाजों के साथ हुआ है। नादेर हबीबी कहते हैं कि इलाके में हमले बंद होने के बाद भी शिपिंग कंपनियों के लिए चुनौती है। समझौते के बाद भी प्रीमियम के रेट्स बहुत ज्यादा हैं, जो कई हफ्तों तक बने रह सकते हैं। इंश्योरेंस भी मुश्किल से हो रहा है। इससे जहाजों का कार्गो ले जाने का काम रुका रह सकता है। 4. ईरान-अमेरिका के हमले का डर-पिछले हफ्ते ही अमेरिकी सेना ने 3 कमर्शियल जहाजों पर हमला किया, जिसमें 3 भारतीय नाविकों की मौत हो गई। ईरान भी ब्लॉकेज प्रभावी बनाने के लिए जहाजों पर हमले करता रहा है। समझौते से एक दिन पहले अमेरिकी नाकेबंदी की वजह से 142 जहाजों को अपना रास्ता बदलना पड़ा। 9 जहाजों को रोक दिया गया। इसलिए शिपिंग कंपनियों को डर है कि अमेरिका और ईरान के बीच जंग फिर से शुरू हो सकती है और उनके जहाज चपेट में आ जाएंगे। हैदर अंजुम का कहना है कि सिर्फ राजनीतिक समझौता होने से स्थिति सामान्य नहीं हो जाएगी। जहाज मालिकों को जमीन पर सुरक्षा और स्थिरता दिखाई देनी चाहिए। जब तक कई महीनों तक कोई नई घटना या हमला नहीं होता, तब तक जहाज मालिक और बीमा कंपनियां यह नहीं मानेंगी कि खतरा वास्तव में कम हो गया है। आवाजाही सामान्य होने में 4 महीने से ज्यादा लग सकते हैं। सवाल-3: भारत में पेट्रोल-डीजल कब तक सस्ता हो जाएगा? जवाबः पेट्रोल-डीजल की कीमत इंटरनेशनल मार्केट में कच्चे तेल की कीमत से सीधे जुड़ी होती हैं। जंग शुरू होने से पहले कच्चे तेल की कीमत 72 डॉलर प्रति बैरल थी। ट्रम्प के समझौते के बाद वापस उतनी ही होती दिख रही हैं। हालांकि समझौता होने का मतलब ये नहीं है कि तेल की कीमतें तुरंत घट जाएंगी। ऐसे इसलिए कि जंग के शुरुआती दो महीने में कच्चे तेल के दाम बढ़ने के बावजूद सरकार ने पेट्रोल-डीजल के दाम नहीं बढ़ाए। इससे तेल कंपनियों को रोजाना 1,000 करोड़ का नुकसान हुआ। फिर 15 से 25 मई के बीच देश में पेट्रोल-डीजल के दाम 7.5 रुपए प्रति लीटर तक बढ़े, फिर भी कंपनियों को रोजाना करीब 600 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। वेल्थ मैनेजमेंट कंपनी डिजर्व के को-फाउंडर वैभव पोरवाल के मुताबिक, 'सरकार ने महंगे तेल का भार आम लोगों पर नहीं डाला था। अब तेल सस्ता होने पर भी सरकार तुरंत दाम कम न करके तेल कंपनियों को नुकसान की भरपाई करने देगी।' आनंद राठी शेयर्स एंड स्टॉक ब्रोकर्स के डायरेक्टर थॉमस स्टीफन के मुताबिक, पेट्रोल डीजल की कीमत में गिरावट तब हो सकती है, जब कच्चा तेल करीब 65 डॉलर प्रति बैरल तक आ जाए और फिर इतना ही बना रहे। इसमें कुछ हफ्तों का समय लग सकता है। जेएनयू में फॉरेन अफेयर्स के प्रोफेसर राजन कुमार कहते हैं, 'तेल के दाम पहले जैसे होने में 6-9 महीने लग सकते हैं। बड़ी तेल कंपनियां पहले से तय कॉन्ट्रैक्ट पर तेल खरीदती-बेचती हैं। कई बार 6 महीने पहले ही तय हो जाता है कि कितना तेल किस कीमत पर खरीदना है।' पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री सुरेश गोपी ने भी कहा है कि कच्चा तेल सस्ता होने के तुरंत बाद पेट्रोल के दाम कम नहीं किए जा सकते। होर्मुज से सस्ता तेल भारत आने में समय लगेगा। सवाल-4: क्या होर्मुज दोबारा भी बंद हो सकता है? जवाबः एक सीनियर अमेरिकी ऑफिसर ने बताया कि अमेरिकी टीम ईरान के साथ समझौते को लेकर सचेत है। अगर ईरान जो वादे कर रहा है, वो सब करता है, तो ये एक जबरदस्त समझौता होगा। इसे आप आखिरी एमओयू भी कह सकते हैं, लेकिन जब तक कोई पूरा और बाध्यकारी एग्रीमेंट न हो जाए, तो कोई भी पक्ष किसी भी समय इससे पीछे हट सकता है। इससे होर्मुज को लेकर फिर तनाव पैदा हो सकता है। दरअसल, समझौता होने के बाद भी अभी 3 बड़े मुद्दे हैं, जिन पर 60 दिन के अंदर फैसला लिया जाना है- ईरान के न्यूक्लियर प्रोग्राम से जुड़े सवाल- समझौते में ये तो लिखा है कि ईरान कभी परमाणु हथियार न तो बनाएगा और न ही खरीदेगा। लेकिन कई बातों पर सहमति बाकी है। जैसे- क्या ईरान अपनी परमाणु सामग्री अपने पास ही रख सकेगा, क्या उसे अपनी न्यूक्लियर लैबोरेट्री बंद करने होंगी, उसे नए परमाणु ईंधन को संवर्धित करने की अनुमति होगी। स्ट्रैटेजिक अफेयर्स के एक्सपर्ट मीर खान कहते हैं, 'ईरान में कई नेता उसके न्यूक्लियर प्रोग्राम को ईरानी शासन के बने रहने की गारंटी मानते हैं। कट्टरपंथी शासन ने अब तक ऐसा कोई संकेत नहीं दिया है कि वह इससे पीछे हटने को तैयार हैं।' अगर बात बिगड़ी तो होर्मुज वापस बंद होने में वक्त नहीं लगेगा। डील से दूर इजराइल अड़ंगा डाल सकता है-ईरान की शर्त के मुताबिक, समझौते में कहा गया है कि लेबनान पर इजराइल के हमले सहित सभी मोर्चों पर जंग रुकेगी। इसमें सबसे बड़ी अड़चन ये है कि समझौते में इजराइल शामिल ही नहीं है।

1098 की टीम ने संभाली मेले में बच्चों की सुरक्षा की कमान, एएचटी और श्रम विभाग ने दिया साथ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रॉबर्ट्सगंज। बीते बुधवार को

स्थानीय मेले में आज चाइल्ड हेल्पलाइन के नेतृत्व में संयुक्त टीम ने बाल श्रम और मानव तस्करी की रोकथाम के लिए सघन निरीक्षण अभियान चलाया। इस टीम में परियोजना समन्वयक मुकेश सिंह, काउंसलर अमन सोनकर, एएचटी के धनंजय सिंह और श्रम निरीक्षक मनोज शर्मा शामिल रहे। टीम ने झूलों, फूड स्टॉल, दुकानों और अस्थायी ढाबों पर काम कर रहे लोगों की जांच की। 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को श्रम और शोषण से बचाना निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य था। अधिकारियों ने क्या कहाः- 'मुकेश सिंह, परियोजना समन्वयक, चाइल्ड हेल्पलाइन ने कहा, '1098 पर कॉल करते ही मदद पहुंचेगी। मेले में कोई भी बच्चा संकट में दिखे तो तुरंत एएचटी प्रभारी राम दरस ने कहा कि एएचटी की टीमें लगातार गश्त पर हैं और बिना आईडी प्रूफ किसी को काम पर न रखने की हिदायत दी। श्रम निरीक्षक मनोज शर्मा ने कहा कि बाल श्रम कराना दंडनीय अपराध है। टीम ने मेले में हेल्पलाइन 1098 के पंपलेट बांटे। निरीक्षण में कोई भी नाबालिग बाल श्रम करते नहीं मिला।

खतौनी में अंश निर्धारण फीड न होने से फार्मर रजिस्ट्रेशन में दिक्कत, भाजपा नेता अशोक मिश्रा ने डीएम से की किसानों की समस्या दूर करने की मांग

एसडीएम सदर ने बताया जिन खातों का अंश निर्धारण हो चुका उनकी प्रविष्टि तुरंत होगी, लेखपालों को भी अभिलंब फीडिंग के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। तहसील के कंप्यूटर में खतौनी का अंश निर्धारण फीड न होने के कारण किसानों को फार्मर रजिस्ट्रेशन कराने में परेशानी हो रही है, जिससे उन्हें खाद-बीज लेने में दिक्कतें आ रही हैं। इस समस्या को लेकर भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य व पूर्व जिला अध्यक्ष अशोक मिश्रा ने जिलाधिकारी सोनभद्र को पत्र लिखकर हस्तक्षेप की मांग की है। अशोक मिश्रा ने बताया कि कई किसानों के खातों का अंश निर्धारण होने के बावजूद कंप्यूटर में प्रविष्टि न होने से उनका फार्मर रजिस्ट्रेशन नहीं हो पा रहा। इससे खाद-बीज से जुड़ी गंभीर समस्या उत्पन्न हो रही है। उन्होंने

उपजिलाधिकारी रॉबर्ट्सगंज से दूरभाष पर वार्ता कर किसानों की समस्या से अवगत कराया। उपजिलाधिकारी ने आश्वासन दिया कि जिन खातों का अंश निर्धारण हो चुका है, उनकी प्रविष्टियां तत्काल कंप्यूटर प्रणाली में फीड कराई जाएंगी, ताकि किसानों का रजिस्ट्रेशन सुगमता से हो सके। जिन किसानों का किसी कारण से अंश निर्धारण नहीं हुआ है, लेखपाल उनके अंश निर्धारण कर कंप्यूटर ऑपरेटर को देंगे और उसे भी अभिलंब दर्ज किया जाएगा। इससे किसानों को अनावश्यक परेशानी नहीं होगी और समय पर खाद-बीज मिल सकेगा। उपजिलाधिकारी ने कहा कि यह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रबल इच्छा है। अशोक मिश्रा ने डीएम से आग्रह किया कि वे अपने स्तर से उपजिलाधिकारी रॉबर्ट्सगंज सहित अन्य तहसीलों के उपजिलाधिकारियों को अंश निर्धारण की फीडिंग के संबंध में प्रभावी निर्देश जारी करें, ताकि कृषि कार्य में किसानों को कोई समस्या न हो।

जिले में स्वास्थ्य व्यवस्था वेंटिलेटर पर केकराही मेडिसिटी हॉस्पिटल में जच्चा बच्चा के मौत के बाद एफआईआर दर्ज हॉस्पिटल सील

शुक्रवार को परिजनो ने कलेक्ट्रेट पहुच डीएम के नाम एडियम को पत्र दिया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) करमा। केकराही स्थित मेडिसिटी अस्पताल में प्रसव के लिए भर्ती प्रसूता

की ऑपरेशन के बाद हालत बिगड़ गई। वाराणसी रेफर किए जाने के बाद उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। लेकिन परिजन ने कहा कि केकराही में ही मौत हो चुकी थी लेकिन अपने को बचने के लिए हॉस्पिटल वाला भेज दिया। शव को लेकर अस्पताल पहुंचे और लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। उन्होंने मामले की जांच कर कार्रवाई की मांग की। घोरावल क्षेत्र के पुरखास गांव निवासी संतोषी (25) पत्नी रामजी प्रसव के लिए करमा क्षेत्र के टिकुरिया स्थित अपने मायके आई थीं। बुधवार शाम प्रसव पीड़ा होने पर उन्हें केकराही के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। परिजनों का आरोप है कि अस्पताल ने बताया गया कि गर्भ में पल रहे बच्चे की मौत हो चुकी है और तत्काल ऑपरेशन जरूरी है। रात में ऑपरेशन के कुछ देर बाद ही प्रसूता की हालत बिगड़ने लगी। गंभीर स्थिति होने पर उसे वाराणसी रेफर किया गया, जहां बृहस्पतिवार को उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। परिजनों ने अस्पताल प्रबंधन पर ऑपरेशन में लापरवाही का आरोप लगाया है। प्रभारी निरीक्षक सूर्यभान ने बताया कि परिजनों की ओर से तहरीर के आधार पर 118/26 के तरह मुकदमा पंजीकृत किया गया है। शव का पोस्टमार्टम कराया गया है। नोडल अधिकारी डॉ. गुलाब शंकर ने बताया कि अस्पताल पंजीकृत है। लेकिन हॉस्पिटल को सील किया जाता है।नोटिस चस्पा किया गया है।

पीएम आवास प्लस के लिए पेटराही में खुली बैठक, 208 लाभार्थियों की सूची का सत्यापन

डीएम के निर्देश पर ग्राम पंचायतों में सत्यापन अभियान तेज, ग्रामीण बोले- सरकार के सहयोग से पूरा होगा पक्के घर का सपना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। प्रधानमंत्री आवास प्लस योजना के तहत निर्धनों को पक्की

छत देने की कवायद तेज हो गई है। नवागत जिलाधिकारी चर्चित गौर के दिशा-निर्देशन में जिले की ग्राम पंचायतों में खुली बैठक कर लाभार्थियों की पात्रता सूची का सत्यापन कराया जा रहा है। जिलाधिकारी स्तर से जारी दिशा-निर्देशों के क्रम में ग्राम पंचायत पेटराही के पंचायत भवन पर गुरुवार को विधिवत खुली बैठक आयोजित की गई। बैठक में ग्राम प्रधान साधना पांडे व पंचायत सचिव की मौजूदगी में आवास के लिए चयनित 208 लाभार्थियों के नाम पढ़कर सुनाए गए। उपस्थित ग्रामीणों से इस संबंध में विचार-विमर्श किया गया। पात्रता का निर्धारण बिंदुवार समीक्षा करते हुए किया गया। सभी बिंदुओं पर सहमति के बाद बैठक का प्रस्ताव ग्राम प्रधान साधना पांडे द्वारा अनुमोदित कर अग्रिम कार्रवाई के लिए प्रेषित किया गया। ग्राम पंचायत के गणमान्य जनों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। सरकार की इस योजना से ग्रामीणों में खुशी का माहौल है। ग्रामीणों ने कहा कि अपने श्रम से भले ही न बन पाता, लेकिन सरकार के सहयोग से पक्के घर का सपना अब साकार होता दिख रहा है। बैठक में पत्रकार धर्मेंद्र कुमार पांडे, ललित पांडे, मिथिलेश पांडे, प्रधान प्रतिनिधि राजमणि, समाज सेवी पंकज पांडे, मनोज कुमार पंचायत सहायक सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण जन मौजूद रहे।

राहुल गांधी जी के जन्मदिवस पर युवा कांग्रेस ने आयोजित किया विशाल रक्तदान शिविर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। भारतीय युवा कांग्रेस, सोनभद्र द्वारा नेता प्रतिपक्ष एवं जननायक श्री राहुल गांधी जी के जन्मदिवस के अवसर पर पंचशील हॉस्पिटल, चुर्क मोड़, रॉबर्ट्सगंज में एक विशाल स्वैच्छिक रक्तदान

शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व भारतीय युवा कांग्रेस सोनभद्र के जिला अध्यक्ष शशांक मिश्रा ने किया।

शिविर में युवाओं, कांग्रेस कार्यकर्ताओं एवं समाजसेवियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए रक्तदान कर मानव सेवा और सामाजिक सरोकारों का संदेश दिया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष शशांक मिश्रा ने कहा कि, 'राहुल गांधी जी की राजनीति सेवा, समर्पण और जनसरोकारों की राजनीति है। उनके जन्मदिवस पर रक्तदान शिविर का आयोजन कर युवा कांग्रेस समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन कर रही है। रक्तदान किसी जरूरतमंद को जीवन देने का सबसे बड़ा माध्यम है और युवाओं को ऐसे सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए।' जिला कांग्रेस कमेटी, सोनभद्र के अध्यक्ष रामराज सिंह गोंड ने कहा कि, 'राहुल गांधी जी ने सदैव देश के युवाओं, किसानों, मजदूरों, आदिवासियों और वंचित वर्गों की आवाज़ को मजबूती से उठाया है।

उनके जन्मदिवस पर आयोजित यह रक्तदान शिविर सेवा और मानवता के मूल्यों को मजबूत करने वाला सराहनीय प्रयास है। कांग्रेस पार्टी हमेशा जनसेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता देती रही है।' वरिष्ठ कांग्रेस नेता राजेश द्विवेदी ने अपने वक्तव्य में कहा कि, 'राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्ति नहीं बल्कि समाज के प्रति दायित्व निभाना भी है। रक्तदान शिविर जैसे कार्यक्रम सामाजिक जागरूकता और मानवीय संवेदनाओं को बढ़ावा देते हैं। राहुल गांधी जी का जीवन संघर्ष, सादगी और जनता के प्रति समर्पण का उदाहरण है।' शहर कांग्रेस अध्यक्ष हाजी फरीद अहमद ने कहा कि, 'रक्तदान मानवता की सबसे बड़ी सेवा है। किसी अज्ञात व्यक्ति की जान बचाने से बड़ा पुण्य कोई नहीं हो सकता।

राहुल गांधी जी के जन्मदिवस पर आयोजित यह कार्यक्रम समाज में भाईचारे, एकता और सेवा की भावना को सशक्त करने का कार्य कर रहा है।

' शिविर में शशांक मिश्रा, रोहिल मिश्रा, मृदुल मिश्रा, अनुपम, बृजेश तिवारी, प्रदीप चौबे, हाजी फरीद अहमद, रामराज सिंह गोंड, क्षितिज सिंह, प्रांजल श्रीवास्तव, शीतला पटेल, उत्कर्ष द्विवेदी, शंकर लाल, राहुल तथा सूर्य कुमार ने स्वैच्छिक रक्तदान कर मानवता की सेवा का संदेश दिया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से रामविलास पनिका, जितेन्द्र पासवान, सेतराम केशरी, राजेन्द्र भारती, श्रीकांत मिश्रा, अमरेश देव पाण्डेय सहित कांग्रेस पार्टी एवं युवा कांग्रेस के दर्जनों पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। अंत में आयोजकों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग देने वाले चिकित्सकों, रक्तदाताओं, मीडिया प्रतिनिधियों एवं सभी कांग्रेसजनों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा राहुल गांधी जी के स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामना की।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Enjoy Publicity
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

अपनी हर खुशी सोशल मीडिया के साथ शेयर करता हूँ, लाइक-कमेंट न मिले तो परेशान होता हूं, खुशी बेमानी लगती है, क्या ये सामान्य हैं

नयी दिल्ली। आज हर व्यक्ति सोशल मीडिया से जुड़ा हैं और आदत भी लगी हैं अकेलापन अब

किया? क्या मैंने अच्छा काम किया? अब सवाल बन जाता हैः लोगों ने क्या सोचा? क्या पर्याप्त यह है कि सोशल मीडिया वास्तविक जीवन का आईना नहीं है। वहां हम सिर्फ अपना अच्छा किसी लाइक की जरूरत नहीं। स्टेप 2 लाइक्स को नहीं, अपनी कोशिश को स्कोर दें-हम अपनी उपलब्धियों को हमेशा नतीजों से मापते हैं। लेकिन मनोविज्ञान ये कहता है कि अचीवमेंट से ज्यादा जरूरी और महत्वपूर्ण है- प्रयास। यानी हम कितनी कोशिश करते हैं। ये कोशिश बाहरी दुनिया के वैलिडेशन से बिलकुल अलग हमारी पर्सनल जर्नी होती है। इसलिए एक काम करिए। अपनी एक अचीवमेंट डायरी बनाइए। उस डायरी में किसी भी उपलब्धि से जुड़ी अपनी हर कोशिश के लिए कॉलम बनाइए और उन सबको नंबर दीजिए। डायरी में सोशल मीडिया पर मिली तारीफों और कमेंट का कोई कॉलम नहीं रखिए। यह अभ्यास धीरे-धीरे दिमाग को नए तरीके से सोचने की ट्रेनिंग देगा। स्टेप 3 अपने विचारों को चुनौती देना-कॉग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत ये है कि हमारे मन में आने वाली हर बात और हर विचार सच नहीं होता। इस बात को एक उदाहरण से समझिए। आपका प्रमोशन हुआ, आपने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया। लोगों ने इस पर ज्यादा रिएक्ट नहीं किया। अब आपके मन में ऐसे विचार आ सकते हैं- विचारः 'लोगों ने ज्यादा रिएक्शन नहीं दिया, इसलिए मेरा ये अचीवमेंट खास नहीं है।' सच्चाईःप्रमोशन आपकी मेहनत का परिणाम है।कंपनी ने आपके टैलेंट को रिवॉर्ड दिया है। आपके स्किल की वजह से आपको प्रमोशन मिला है। लोगों की कम प्रतिक्रिया इस फैक्ट को नहीं बदल सकती। जब भी आपके मन में नेगेटिव विचार आए, उसे जस-का-तस स्वीकार मत करिए। उसे चुनौती दीजिए। स्टेप 4 असली लोगों को महत्व दीजिए, ऑडियंस को नहीं-कई बार सोशल मीडिया पर 500 लोगों की प्रतिक्रिया का असर उन 5 लोगों से ज्यादा हो जाता है, जो वास्तव में हमारे जीवन का हिस्सा हैं। इसलिए उन लोगों की लिस्ट बनाइए, जो आपके जीवन में सचमुच में मायने रखते हैं। जैसेकिः-जीवनसाथी माता-पिता भाई-बहन करीबी मित्र मेंटर फिर सोचिएः 'इन लोगों की राय ज्यादा महत्वपूर्ण है या उन लोगों की, जिनसे मैंने वर्षों से बात नहीं की?' जवाब बिल्कुल साफ होता है। सच्चे रिश्ते लाइक्स से ज्यादा मूल्यवान होते हैं। स्टेप 5 निजी सेलिब्रेशन करना सीखिए- हर

लोग वर्चुअल दोस्तों से पूरी करते हैं ऐसी विषय पर बात करेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 31 साल का हूं। हाल ही में मुझे प्रमोशन मिला है। बाहर से देखने पर मेरी जिंदगी ठीक लगती है, लेकिन मैं एक अजीब समस्या से जूझ रहा हूं। जब भी मेरे साथ कोई अच्छी बात होती है, तो मुझे उसे तुरंत सोशल मीडिया पर शेयर करने की इच्छा होती प्रतिक्रिया मिली? क्या मेरी सफलता दूसरों को प्रभावित कर पाई? धीरे-धीरे अचीवमेंट की असली खुशी पीछे छूट जाती है और उसकी जगह सोशल वैलिडेशन ले लेता है। खुशी के दो चेहरेः आंतरिक और बाहरी। मनोविज्ञान में उपलब्धियों से मिलने वाली खुशी को मोटे तौर पर दो हिस्सों में बांटा जाता है। 1. आंतरिक खुशी-यह वह खुशी है, जो भीतर से आती है। जब आप सोचते हैंः 'मैंने मेहनत की, मैंने कुछ नया सीखा, मैं अपने लक्ष्य तक पहुंचा।' ये खुशी अपेक्षाकृत स्थिर होती है। यह लंबे और खुशहाल चेहरा दिखाते हैं, सिर्फ अपनी उपलब्धियां दिखाते हैं। वहां हम अपना दुख, तकलीफ, निराशा और अकेलापन नहीं दिखाते। जब उपलब्धियां छोटी लगने लगें-बाहरी मान्यता पर निर्भरता का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि व्यक्ति अपनी उपलब्धियों का आनंद लेना भूल जाता है। उसे एक प्रमोशन मिलता है, लेकिन कुछ समय बाद वह सोचता हैः- 'लेकिन मेरे दोस्त का प्रमोशन बड़ा था।' एक उपलब्धि मिलती है। फिर लगता हैः-'मुझे उतनी बधाई नहीं मिली।'इस तरह ध्यान उपलब्धि से

है। अगर लोग बधाई दें, तारीफ करें तो मुझे अच्छा लगता है। लेकिन अगर अपेक्षा के अनुसार रिएक्शन न मिले तो खुशी अधूरी लगती है। कई बार ऐसा हुआ है कि किसी अचीवमेंट को लेकर मैं सिर्फ तब तक उत्साहित रहा, जब तक लोगों के मैसेज, कमेंट्स आते रहे। बाद में वही अचीवमेंट मुझे खास नहीं लगा। क्या मैं अपनी खुशी बाहर ढूंढ रहा हूं? अगर हां, तो इससे कैसे बाहर निकलूं? यह सिर्फ आपकी कहानी नहीं है। सोशल मीडिया के दौर में बड़ी संख्या में लोग इस अनुभव से गुजर रहे हैं। यहां बात ये नहीं है कि अपनी खुशी साझा करना गलत है। सवाल यह है कि हमारी खुशी का स्रोत हमारा अचीवमेंट है या फिर दूसरों का वैलिडेशन? यहीं से शुरू होती है बाहरी मान्यता यानी एक्सटर्नल वैलिडेशन की कहानी। समस्या तब शुरू होती है, जब हमारी खुशी इस बात पर निर्भर होने लगे कि दूसरे लोग हमारी सफलता को कितना नोटिस करते हैं। सोशल मीडिया का वैलिडेशन क्षणिक होता है। स्थायी आत्मसम्मान तो भीतर से आता है। कल्पना कीजिए कि आपने महीनों मेहनत करके कोई लक्ष्य हासिल किया। पहले आपकी खुशी इस बात से तय होती थी कि- आपने कितना सीखा। कितनी मेहनत की। कितना आगे बढ़े। लेकिन अब आपकी खुशी का एक हिस्सा इस पर निर्भर हो गया है कि आपकी पोस्ट पर कितने लाइक्स आए, किसने बधाई दी और किसने नहीं दी। यहीं पर उपलब्धि का केंद्र बदल जाता है। पहले सवाल होता थाः क्या मैंने अपना लक्ष्य हासिल समय तक बनी रहती है क्योंकि इसका स्रोत आपके भीतर है। 2. बाहरी खुशी-यह खुशी दूसरों के रिएक्शन से पैदा होती है। 'लोग प्रभावित हुए।' 'सबने बधाई दी।' 'मेरी उपलब्धि को नोटिस किया गया।' यह खुशी बुरी नहीं है। समस्या तब होती है, जब यही खुशी का मुख्य स्रोत बन जाए क्योंकि बाहरी प्रतिक्रिया हमेशा आपके नियंत्रण में नहीं होती। सोशल मीडिया और डोपामिन का खेल-जब हम सोशल मीडिया पर कोई उपलब्धि पोस्ट करते हैं और लोगों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है तो मस्तिष्क में डोपामिन नामक न्यूरोट्रांसमीटर सक्रिय होता है।डोपामिन को अक्सर 'फील-गुड केमिकल' कहा जाता है, लेकिन वास्तव में यह केवल खुशी से नहीं, बल्कि इनाम मिलने की उम्मीद से भी जुड़ा होता है।यही कारण है कि लोग बार-बार नोटिफिकेशन चेक करते हैं- कितने लाइक्स आए? किसने कमेंट किया? किसने स्टोरी देखी? धीरे-धीरे दिमाग सीखने लगता है कि उपलब्धि से ज्यादा रोमांच प्रतिक्रिया में है। तब व्यक्ति अनजाने में यह मानने लगता है किः-'जब तक लोग मेरी सफलता को अप्रूव नहीं करेंगे, तब तक वह पूरी तरह रिअल नहीं लगेगी। यहीं से निर्भरता शुरू होती है।' सोशल मीडिया कैसे बन जाता है एक अदृश्य जज- सोशल मीडिया एक मंच है, लेकिन कई लोगों के लिए यह धीरे-धीरे एक मनोवैज्ञानिक जज की तरह काम करने लगता है। हम खुद से पूछने लगते हैंः- क्या मेरी उपलब्धि पर्याप्त बड़ी थी? क्या लोग प्रभावित हुए? क्या मैं दूसरों जितना सफल हूं? समस्या हटकर तुलना पर चला जाता है। इसका नतीजा ये होता है कि :- संतोष कम हो जाता है। तुलना बढ़ जाती है। आत्मसम्मान कमजोर होने लगता है। हमेशा कुछ बड़ा पाने की इच्छा बनी रहती है। मनोविज्ञान में इसे हेडॉनिक ट्रेडमिल कहा जाता है। यानी आप लगातार दौड़ रहे हैं, लेकिन संतोष वहीं-का-वहीं खड़ा है। क्या आपकी खुशी बाहरी वैलिडेशन पर निर्भर है? हर व्यक्ति को जीवन में कुछ हद तक बाहरी वैलिडेशन की जरूरत होती है। आखिर हम सब सामाजिक प्राणी हैं। लेकिन कुछ संकेत बताते हैं कि ये निर्भरता हद से ज्यादा बढ़ रही है। इसे समझने के लिए यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा हूं। नीचे ग्राफिक्स में तीन सेक्शंस में कुल 15 सवाल हैं। आपको इन सवालों को 0 से 4 के स्केल पर रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए अगर आपका जवाब 'कभी नहीं' है तो 0 नंबर दें और अगर आपका जवाब 'लगभग हमेशा' है तो 4 नंबर दें। अंत में अपने टोटल स्कोर की एनालिसिस करें। वैलिडेशन के ट्रैप से बाहर कैसे निकलें-सीबीटी आधारित सेल्फ हेल्प प्लान-स्टेप 1 अचीवमेंट की परिभाषा बदलें- जब भी कोई सफलता मिले तो खुद से ये पांच सवाल पूछेंः मेरा लक्ष्य क्या था? मैंने कितना प्रयास किया? मैंने कौन सी चुनौतियां पार कीं? मैंने क्या सीखा? अगर सोशल मीडिया न होता तो क्या मैं इसे उपलब्धि मानता? ध्यान देने वाली बातः यहां पर आखिरी सवाल सबसे महत्वपूर्ण है। यदि आपका जवाब 'हां' है तो आपकी उपलब्धि वास्तविक है। उसे खुशी को पब्लिक करना, सबके सामने उसका ढोल पीटना जरूरी नहीं है। कुछ खुशियां बहुत पर्सनल भी होती हैं।

हर चीज को तुरंत पब्लिक करने और लोगों से बांटने की बजाय कुछ वक्त तक उसके साथ अकेले रहना चाहिए। मनोवैज्ञानिक सलाह देते हैं कि कोई अचीवमेंट हासिल होने पर कम-से-कम 48 घंटे तक उसे सोशल मीडिया पर पोस्ट न करें। इन 48 घंटों मेंः- खुद को बधाई दे। परिवार के साथ जश्न मनाएं। अपने बेहद करीबी मित्रों के साथ इंजॉय करें। अपनी उपलब्धि के बारे में लिखें। उस यात्रा को याद करें, जिसने आपको यहां तक पहुंचाया। कई लोग पाते हैं कि दो दिन के बाद उस उपलब्धि को पोस्ट करने की इच्छा बहुत कम हो जाती है क्योंकि तब तक वे उसे भीतर से महसूस कर चुके होते हैं। खुशी का सबसे भरोसेमंद सोर्स- दूसरों की प्रशंसा अच्छी लगना पूरी तरह सामान्य है। समस्या प्रशंसा नहीं, बल्कि उस पर निर्भरता है। सोशल मीडिया की तालियां सुखद हो सकती हैं, लेकिन वे आत्मसम्मान की नींव नहीं बन सकतीं। स्थायी संतोष तब पैदा होता है, जब व्यक्ति खुद से कह सकेः 'मैंने मेहनत की। मैंने सीखा। मैं अपने मूल्यों के अनुसार आगे बढ़ा। इसलिए यह उपलब्धि महत्वपूर्ण है।' अंतिम बात-जिस दिन आपकी उपलब्धि का मूल्य लाइक्स से नहीं, बल्कि आपके प्रयासों से तय होने लगेगा, उसी दिन खुशी ज्यादा स्थिर और गहरी महसूस होगी क्योंकि तब आपकी सफलता दूसरों की स्क्रीन पर नहीं, आपके भीतर दर्ज होगी।

कनाडा की फुटबॉल वर्ल्डकप में पहली जीत-जोनाथन डेविड की हैट्रिक, कतर के 2 प्लेयर्स को रेड कार्ड

स्पोर्ट्स डेस्क। 'हैट्रिक... आत्मघाती गोल और 2 रेड कार्ड।' ये सब कनाडा और कतर मैच में

देखने को मिला, जिसमें कनाडा ने फुटबॉल वर्ल्ड कप में अपनी पहली जीत हासिल की। टीम ने होम फैंस के सामने कतर को ग्रुप-बी मैच में 6-0 के बड़े अंतर से हराया। वैंकूवर ग्राउंड पर वर्ल्डकप हैट्रिक लगाने वाले दूसरे खिलाड़ी हैं। इंग्लैंड के ज्योफ हर्स्ट (1966) पहले हैं।

साइल लारिन के गोल से कनाडा को बढ़त-कनाडा को 16वें मिनट में साइल लारिन के गोल से बढ़त मिली। फिर जोनाथन डेविड ने 29वें मिनट में गोल दागा। उन्होंने पहले हाफ के इंजरी टाइम के तीसरे मिनट में गोलकर स्कोर 3-0 कर दिया। कतर के 2 प्लेयर्स को रेड कार्ड-33वें मिनट में ताजोन बुकेनन पर फाउल के लिए कतर के होमन अहमद को रेड कार्ड मिला। 51वें मिनट में इस्माइल कोन पर खतरनाक टैकल के बाद अस्सिम मादीबो को रेड कार्ड दिखाया गया। कतर को आखिरी 49 मिनट 9 प्लेयर्स से खेलना पड़ा-

हैं। डेविड ने मौजूदा वर्ल्ड कप में दूसरी हैट्रिक लगाई है। पहली लियोनेल मेसी ने लगाई थी। होम के साथ खेलना पड़ा। इसी कारण वह कनाडा के हमलों का सामना नहीं कर सकी। साल्बिा का फ्री-किक्व पर गोल, मनाई का आत्मघाती गोल-नाथन सालिबा ने

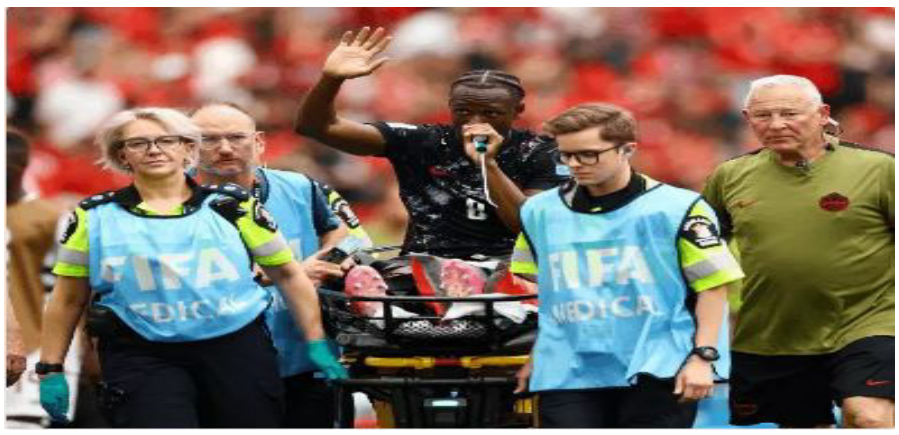

केॅप पैलेस में शुक्रवार सुबह मिली इस जीत के हीरो जोनाथन डेविड रहे। 26 साल के युवा स्टार ने मैच के इंजरी टाइम के दूसरे मिनट में नाथन सालिबा के पास को हल्के टच से कंट्रोल किया, फिर जोरदार किक लगाकर बॉल को गोल पोस्ट में धकेल दिया। इसी के साथ उन्होंने वर्ल्ड कप में अपनी पहली हैट्रिक पूरी की। वे सुपीरियर प्लेयर ऑफ द मैच चुने गए। जोनाथन डेविड की हैट्रिक में खास-वे फुटबॉल वर्ल्ड कप में हैट्रिक लगाने वाले कनाडा के पहले खिलाड़ी बने

मादीबो को रेड कार्ड मिलने के बाद कतर की मुश्किलें बढ़ गईं। टीम को आखिरी 49 मिनट 9 प्लेयर्स

64वें मिनट में फ्री-किक से गोल किया।

75वें मिनट में मोहम्मद मनाई के आत्मघाती गोल से कनाडा की बढ़त 5-0 हो गई। इंजरी टाइम में डेविड ने तीसरा गोल कर हैट्रिक पूरी की और टीम की 6-0 की ऐतिहासिक जीत तय की। साइल लारिन बोले- कनाडा ने दुनिया को अपना दम दिखाया-कनाडा के स्ट्राइकर साइल लारिन ने कहा- 'हमने दुनिया को दिखा दिया कि कनाडा क्या है।

हमारे कई खिलाड़ी लगभग गुमनामी से आए हैं, लेकिन हमने अपना जज्बा और लड़ने की क्षमता दिखाई। हमने साबित किया कि हम विश्व मंच पर प्रदर्शन कर सकते हैं।' 'यह तो सिर्फ शुरुआत है। इस्माइल कोए की चोट दुखद है और भावुक करने वाली भी, लेकिन हम मैदान पर लौटे और अपना काम पूरा किया। कोने हमारे दिमाग में रहेंगे और हम उनके लिए भी खेलेंगे।' मैच 26ः स्विट्जरलैंड बनाम बोस्निया, स्कोरलाइन 4-1-मंजाम्बी के डबल गोल से जीता स्विट्जरलैंड -स्विट्जरलैंड ने बोस्निया-हर्जेगोविना को 4-1 से हराकर ग्रुप-बी में स्थिति मजबूत कर ली। इंगलवुड में दोनों टीमों के बीच कड़ा संघर्ष हुआ। दूसरे हाफ में जोहान मंजाम्बी के डबल गोल ने स्विस टीम को बढ़त दिलाई। बोस्निया को आखिरी में 10 प्लेयर्स के साथ खेलना पड़ा, क्योंकि तारिक मुहरेमोविच को खतरनाक टैकल के लिए रेड कार्ड मिला। एलए स्टेडियम में 19 जून के मुकाबले में मंजाम्बी 71वें मिनट में सब्स्टीट्यूट के तौर पर मैदान पर आए और 74वें मिनट में शानदार वॉली से स्विट्जरलैंड को बढ़त दिलाई। 84वें मिनट में रुबिन वर्गास के गोल से बढ़त दोगुनी हो गई। 90वें मिनट में मंजाम्बी ने दूसरा गोल किया, जबकि इंजरी टाइम में कप्तान ग्रेनिट झाका ने पेनल्टी को गोल में बदलकर स्कोर 4-0 कर दिया।

बोस्निया के लिए एरमिन माहमिक ने अंतिम क्षणों में एक गोल कर हार का अंतर कम किया, लेकिन टीम को 4-1 से हार झेलनी पड़ी।

इस जीत के साथ स्विट्जरलैंड ने कतर के खिलाफ पहले मैच की निराशा पीछे छोड़कर नॉकआउट चरण की ओर मजबूत कदम बढ़ाया है।

फ़ीफ़ा वर्ल्ड कप

अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया का मुकाबला,जीतने वाली टीम ग्रुप में टॉप पर पहुंचेगी

स्पोर्ट्स डेस्क। फ़ीफ़ा वर्ल्ड कप में आज रात अमेरिका का मुकाबला ऑस्ट्रेलिया से होगा। यह मैच रात 12:30 बजे से सिएटल स्टेडियम में खेला जाएगा। ग्रुप-डी में शामिल

दोनों टीमों ने अपना पहला मुकाबला जीता था। इनके 3-3 पॉइंट्स हैं। यह मैच जीतने वाली टीम पॉइंट्स टेबल के टॉप पर पहुंचेगी। दूसरा मुकाबला 3:30 बजे से स्कॉटलैंड और मोरक्को के बीच बोस्टन स्टेडियम में खेला जाएगा। इसके बाद पांच बार की चैंपियन ब्राजील और हैती फिलाडेल्फिया स्टेडियम में सुबह 6 बजे से भिड़ेंगे। दिन का आखिरी मुकाबला सुबह 8:30 बजे से तुर्की और परागवे के बीच सैन फ्रांसिस्को बे एरिया स्टेडियम में खेला जाएगा। यह सभी मैच भारतीय समयानुसार 19 जून को खेले जाएंगे। मैच-29ः अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के बीच बराबरी का मुकाबला-अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया ग्रुप-डी में शामिल है। दोनों टीमों के बीच कुल 3

इंटरनेशनल मैच खेले गए हैं। इनमें से दोनों टीमों ने 1-1 मैच जीता है। वहीं 1 मुकाबला ड्रॉ रहा है। फ़ीफ़ा वर्ल्ड कप के इतिहास में दोनों टीमें पहली बार आमने-सामने होंगी। अमेरिका को अपने कप्तान और स्टार फॉरवर्ड क्रिस्टियन पुलिसिक और इन-फॉर्म स्ट्राइकर फोलारिन बालोगुन से गोल की उम्मीद होगी। वहीं ऑस्ट्रेलियाई टीम को अपने अनुभवी गोलकीपर मैथ्यू रायन और मिडफील्डर जैक्सन इरविन से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद होगी। दोनों टीमों की पॉसिबल स्टार्टिंग इलेवनः- अमेरिकाः टर्नर, डेस्ट, रिचर्ड्स, रॉबिन्सन, स्केली, एडम्स, मैकेनी, रेयना, वीह, बालोगुन, पुलिसिक। ऑस्ट्रेलियाः रायन, गेरिया, सूटर, बर्गस, बोस, लेकी, इरविन, मेटकाफ, इरनकुंडा, माबिल, ह्यूस्टिक। मैच-30ः 1998 वर्ल्ड कप में मोरक्को ने स्कॉटलैंड को हराया था-मोरक्को और स्कॉटलैंड ग्रुप-सी में शामिल है। दोनों टीमें दूसरी बार वर्ल्ड कप में टकराएंगी। इससे

पहले 1998 के वर्ल्ड कप में मोरक्को ने स्कॉटलैंड को 3-0 से हराया था। स्कॉटलैंड की टीम का दारोमदार मिडफील्डर स्कॉट मैकटॉमिने और जॉन मैकिगन पर होगा। वहीं मोरक्को की नजरें रियल मैड्रिड के स्टार विंगर ब्राहिम डियाज और पीएसजी के स्टार डिफेंडर अशरफ हकीमी के खेल पर रहेंगी। दोनों टीमों की पॉसिबल स्टार्टिंग इलेवनः स्कॉटलैंडः गन, हेनली, हेंड्री, पोर्टियस, रॉलस्टन, मैकटॉमिने, गिलमोर, रॉबर्टसन, मैकिगन, क्रिस्टी, शैंकलैंड। मोरक्कोः बूनू, हकीमी, अगुएर्ड, डियोप, माजराउई, अमराबात, औनाही, साइबारी, डियाज, अल काबी, एजलजौली। मैच-31ः हैती के खिलाफ जीत की राह पर लौटेगा ब्राजील?ब्राजील और हैती ग्रुप-सी में शामिल है। दोनों टीमें के बीच 2 इंटरनेशनल मुकाबले खेले गए हैं। दोनों ही बार ब्राजील ने जीत दर्ज की है।

आखिरी बार दोनों टीमें 2016 के कोपा अमेरिका कप में भिड़ी थीं, जहां ब्राजील ने हैती को 7-1 के बड़े अंतर से हराया था। वर्ल्ड कप के इतिहास में दोनों टीमें पहली बार आमने-सामने होंगी। ब्राजील को रियल मैड्रिड के स्टार विंगर विनीसियस जूनियर, राफिन्हा और फॉरवर्ड माथियस कुन्हा से आक्रामक खेल की उम्मीद होगी। वहीं हैती की पूरी उम्मीदें उनके कप्तान और गोलकीपर जॉनी प्लेसाइड और मिडफील्डर जीन-रिकनर बेलगार्डे पर टिकी होंगी। दोनों टीमों की पॉसिबल स्टार्टिंग इलेवनः ब्राजीलः एलिसन, डैनिलो, मार्विनहोस, गैब्रिएल, एलेक्स सैंड्रो, गुइमारेस, फैबिन्हो, राफिन्हा, विनीसियस जूनियर, लुइज हेनरिक, माथियस कुन्हा।

हैतीः प्लेसाइड, एक्सपीरियंस, अदे, डेलक्रिक्स, आर्कस, बेलगार्डे, जैक्स, प्रोविडेंस, कौसिमिर, डीडसन, इसिडोर। मैच-32ः तुर्की और परागवे के लिए करो या मरो की सिचुएशन- तुर्की और परागवे ग्रुप-डी में शामिल हैं। दोनों टीमें अपना पहला मैच हारकर ग्रुप में आखिरी दो पायदान पर हैं। इनके लिए यह मैच करो या मरो का होगा। तुर्की और परागवे के बीच सिर्फ 1 इंटरनेशनल मैच खेला गया है। यह मुकाबला ड्रॉ रहा था। वर्ल्ड कप के मंच पर दोनों टीमें पहली बार टकराएंगी।

तुर्की को कप्तान हाकान चालहानोग्लू और युवा आर्डा गुलर से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद होगी। वहीं परागवे की नजरें स्टार विंगर मिगुएल अल्मिरोन और जूनियर अलोंसो के अनुभव पर टिकी होंगी। दोनों टीमों की पॉसिबल स्टार्टिंग इलेवनः-तुर्कीः चाकिर, चेलिक, डेमिरल, बारदाकची,कादियोग्लू, चालहानोग्लू, ओजकैन, यिल्माज, गुलर, यिल्दिज, अकटुरकोग्लू। परागवेः फर्नांडीज, कासेरेस, गोमेज़, अलोंसो, आल्डरेटे, सोसा, कुबास, अल्मिरोन, डी. गोमेज, एनसिसो, सानाब्रिया।

अखबार में कभी न लपेटें खाने की चीज़े,इंक से कैंसर और फूड पॉइजनिंग का रिस्क, जानें फूड पैकेजिंग का सुरक्षित तरीका

नयी दिल्ली। अगर आपको स्ट्रीट फूड पसंद है तो आपने

अखबार में लिपटे समोसे, वड़ा पाव या जलेबियां खाई ही होंगी। लेकिन क्या आप जानते हैं कि खाने-पीने की चीजों को कभी अखबार में नहीं रखना या लपेटना चाहिए? अखबार की इंक सेहत के लिए खतरनाक है। इससे लिवर, किडनी डैमेज हो सकते हैं और कैंसर जैसी गंभीर बीमारी भी हो सकती है। हाल ही में महाराष्ट्र 'फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन' (एफडीए) ने खाने की चीजें अखबार में पैक करने वाले वेंडर्स के खिलाफ अभियान चलाया। इस दौरान 55 में से 26 वेंडर्स अखबार में खाना पैक करते पाए गए, जिन पर कार्रवाई की गई। साल 2016 में जारी 'फूड सेफ्टी स्टैंडर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया' FSSAI (एफएसएसएआई) की एडवाइजरी के मुताबिक, खाने को अखबार में लपेटना अनहेल्दी है। भले ही खाने-पीने की चीजें स्वच्छ तरीके से तैयार की गई हों, लेकिन अखबार के संपर्क से उसकी क्वालिटी और सेफ्टी प्रभावित हो सकती है। इसलिए आजअखबार में खाना लपेटने के हेल्थ रिस्क की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि-इससे क्या बीमारियां हो सकती हैं? फूड रैप और सर्व करने का सही तरीका क्या है? साथ खास चीज़े समझेंगे डॉ. नरेंद्र कुमार सिंगला, प्रिंसिपल कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- एफएसएसएआई ने अखबार में खाना लपेटने को लेकर चेतावनी क्यों जारी की है? जवाब- अखबार की इंक और प्रिंटिंग में इस्तेमाल हुए केमिकल्स खाने में मिल सकते हैं। ये सेहत के लिए हानिकारक हैं। इसलिए एफएसएसएआई ने चेतावनी जारी की है कि खाने को अखबार में लपेटना या उसमें रखना सुरक्षित नहीं है। सवाल- अखबार की इंक में कौन-से खतरनाक केमिकल्स होते हैं? जवाब- इसमें कई तरह के केमिकल्स होते हैं, जो सेहत के लिए नुकसानदायक हो सकते हैं। सवाल- ये केमिकल्स शरीर में जाकर क्या करते हैं? जवाब- ये केमिकल्स शरीर के ब्लूप्रिंट यानी डीएनए, ब्रेन, हॉर्मोन, लिवर और किडनी को नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे कई बीमारियों का रिस्क बढ़ सकता है। सवाल- अखबार में खाना लपेटने या खाने से क्या हेल्थ रिस्क हो सकते हैं?जवाब- अखबार की इंक से कई गंभीर हेल्थ रिस्क हो सकते हैं,

जैसे- डीएनए डैमेज, लिवर डैमेज, किडनी डैमेज, ब्रेन, नर्वस सिस्टम डैमेज, कैंसर, हॉर्मोनल इंबैलेंस, डाइजेस्टिव प्रॉब्लम्स, सेल्स में इंफ्लेमेशन, लंबे समय में क्रॉनिक डिजीज, मेमोरी लॉस, लर्निंग एबिलिटी पर असर, बच्चों की फिजिकल-मेंटल ग्रोथ पर असर, सवाल- अखबार की इंक से कैंसर का रिस्क क्यों बढ़ता है? जवाब- इसके कुछ केमिकल डीएनए को डैमेज कर सकते हैं, जिससे सेल्स की सामान्य ग्रोथ प्रभावित होती है। डीएनए में म्यूटेशन (स्थाई परिवर्तन) कैंसर की वजह बन सकता है। इंक में एमओएच (मिनरल ऑयल एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन), (पॉलीसाइक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन) और एरोमैटिक अमाइन्स जैसे केमिकल्स होते हैं, जो कैंसरकारक होते हैं। ये केमिकल ऑक्सिडेटिव स्ट्रेस बढ़ाकर सेल्स को डैमेज करते हैं, जिससे कैंसर का रिस्क बढ़ सकता है। सवाल- अखबार की इंक से हॉर्मोनल प्रॉब्लम्स क्यों बढ़ती हैं? जवाब- इंक में मौजूद कुछ केमिकल हॉर्मोन्स के काम में रुकावट पैदा कर सकते हैं। इससे हॉर्मोनल बैलेंस बिगड़ सकता है। इसके कारण थायरॉइड की समस्या हो सकती है। फर्टिलिटी भी प्रभावित हो सकती है। बच्चों और किशोरों पर इसका ज्यादा असर हो सकता है। सवाल- क्या अखबार की इंक से फर्टिलिटी भी प्रभावित हो सकती है?जवाब- डॉ. नरेंद्र कुमार सिंगला बताते हैं कि अखबार की इंक खाने के साथ शरीर में जाने से स्पर्म काउंट, स्पीड और क्वालिटी पर नेगेटिव असर हो सकता है।हॉर्मोनल गड़बड़ी से पुरुषों और महिलाओं, दोनों की फर्टिलिटी प्रभावित हो सकती है। इंक में मौजूद कुछ केमिकल प्रेग्नेंसी में फीटस (भ्रूण) की ग्रोथ को भी प्रभावित कर सकते हैं। अखबार भोजन को पैक करने के लिए नहीं बनाया जाता। इसकी इंक में खतरनाक केमिकल्स होते हैं। ये केमिकल्स भोजन के साथ शरीर में पहुंच सकते हैं। लंबे समय तक ऐसा करने से गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। सवाल- एफएसएसएआई ने अखबार में फूड रैप को अनहाइजेनिक क्यों कहा है? इससे क्या समस्याएं हो सकती हैं? जवाब- एफएसएसएआई ने यह स्पष्ट किया है कि अखबार फूड पैकेजिंग के लिए नहीं होता है। यह कई हाथों से होकर गुजरता है। इस दौरान जर्म्स, धूल और गंदगी लग सकती है। इससे फूड पॉइजनिंग और गट इन्फेक्शन का रिस्क हो सकता है।सवाल- क्या अखबार में गर्म या ऑयली खाना लपेटना ज्यादा खतरनाक है? जवाब- गर्मी से अखबार की इंक के केमिकल खाने में जल्दी मिल जाते हैं।कई केमिकल तेल में आसानी से घुल जाते हैं। इसलिए ऑयली फूड को अखबार में लपेटना ज्यादा रिस्की है। इसलिए समोसा, पकौड़ी, कचौरी और पराठे जैसे गर्म व ऑयली फूड्स अखबार में रखकर बिल्कुल नहीं खाने चाहिए। सवाल- क्या अखबार में ड्राई फूड्स रखना भी असुरक्षित है? जवाब- ये थोड़ा कम रिस्की हो सकता है, लेकिन सुरक्षित नहीं है। दरअसल अखबार फूड-ग्रेड सामग्री नहीं है। इसलिए इसमें खाने-पीने से जुड़ी कोई भी चीज नहीं लपेटनी चाहिए। सवाल- अखबार में रैप्ड खाना किसके लिए ज्यादा रिस्की हो सकता है? जवाब- अखबार में लिपटा खाना किसी के लिए भी सेफ नहीं है। लेकिन कुछ लोगों को इससे ज्यादा रिस्क हो सकता है। सवाल- सड़क किनारे खाने-पीने की चीजें खरीदते समय किन बातों का ध्यान रखें? जवाब- स्ट्रीट फूड खरीदते-खाते समय ये बातें ध्यान रखें- ये अखबार में सर्व या पैक न किया गया हो। वेंडर खाने की चीज तैयार करके अखबार में स्टोर न कर रहा हो। दुकान और आसपास साफ-सफाई हो। विक्रेता के हाथ और बर्तन साफ हों। गर्म खाने को सुरक्षित कंटेनर में रखा गया हो। खाना ढककर रखा गया हो। खाना ताजा और गर्म हो। खाना धूल और मक्खियों के संपर्क में न हो। साफ पानी का इस्तेमाल किया जा रहा हो। सवाल- फूड्स रैप करने और सर्व करने के लिए सुरक्षित विकल्प क्या हैं? जवाब- खाना हमेशा फूड-ग्रेड पेपर, कंटेनर, स्टील या कांच के बर्तनों में ही रखें। अखबार, पुराने कागज या प्रिंटेड पेपर का इस्तेमाल खाने को लपेटने या परोसने के लिए न करें।नीचे ग्राफिक में सेफ 'फूड रैप' और 'सर्विंग कंटेनर्स' की लिस्ट देखिए- सवाल- किन चीजों को कभी-भी अखबार में न रखें? जवाब- अखबार में खाने की कोई भी चीज लपेटकर नहीं रखनी चाहिए, लेकिन कुछ चीजें ज्यादा नुकसानदायक हो सकती हैं। समोसा, पकौड़े, जलेबी, रोटी, ब्रेड, कचौरी, परांठे, वड़ा पाव, मिठाइयां, कटे फल, सैंडविच, बर्गर, गर्म / ऑयली भोजन नमकीन और चिप्स, बिस्कुट और बेकरी आइटम। मैगजीन, पैम्फलेट या किसी भी प्रिंटेड पेपर में इंक और केमिकल्स हो सकते हैं। इसलिए इनमें रखा खाना भी असुरक्षित है, क्योंकि- इनका कागज फूड-ग्रेड नहीं होता। इसमें मौजूद इंक और अन्य केमिकल भोजन के संपर्क में आ सकते हैं। पुराने पन्नों पर धूल, गंदगी और जर्म्स हो सकते हैं। सवाल- क्या अखबार में सब्जियां या किराना सामान रखना भी असुरक्षित है? जवाब- हां बिल्कुल। इसकी इंक और गंदगी सब्जी और फूड आइटम्स पर भी लग सकती है।

फरहाना भट्ट का कास्टिंग काउच से सामना,फार्महाउस पर रहने की शर्त थी

मुंबई। बचपन में रिश्तेदार ताने देते थे कि यह परिवार की इज्जत खराब कर देगी। पिकनिक पर ले जाने से पहले सिर पर दुपट्टा रखने की शर्त रखी जाती थी और

उन्हें तिरस्कार झेलना पड़ता था। लेकिन फरहाना भट्ट ने हार मानने के बजाय खुद को साबित किया। आठवीं कक्षा से उन्होंने अपनी पढ़ाई का खर्च खुद उठाना शुरू कर दिया। मॉडलिंग की, पत्रकारिता में हाथ आजमाया और फिर एक्टिंग की दुनिया में कदम रखा। करियर की शुरुआत में मुंबई में एक कथित कास्टिंग स्कैम का सामना किया, जहां कॉन्ट्रैक्ट में कलाकारों को डायरेक्टर के फार्महाउस पर रहने जैसी संदिग्ध शर्तें थीं। बिग बॉस में जाने से पहले जिन डिजाइनरों ने कपड़े देने से इनकार किया था, शो के बाद वही लोग लाखों रुपए के ऑफर लेकर पहुंचे। चार महीने की थीं, तभी पिता छोड़कर चले गए-फरहाना भट्ट का जन्म 15 मार्च 1997 को कश्मीर में हुआ था। जब वह महज चार महीने की थीं, तभी उनके पिता उन्हें और उनकी मां को छोड़कर चले गए। इसके बाद उनकी परवरिश मां और नाना ने की। टेलीइंडिया से बातचीत में फरहाना ने बताया कि बचपन से ही उन्होंने संघर्ष देखा। आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों के बीच उनकी मां ने अकेले उन्हें बड़ा किया। इसी वजह से कम उम्र में उन्होंने जिम्मेदारियां समझीं और आगे चलकर अपनी पढ़ाई व जरूरतों का खर्च खुद उठाने लगीं। आठवीं क्लास से खुद उठा रही थीं पढ़ाई का खर्च-एक्ट्रेस फरहाना भट्ट ने बताया कि उन्होंने आठवीं कक्षा से अपनी पढ़ाई का खर्च खुद उठाना शुरू कर दिया था। इसी वजह से उन्होंने कश्मीर की पहली ई-कॉमर्स कंपनी के लिए मॉडलिंग शुरू की। उस समय उन्हें करीब 1500 रुपए प्रतिदिन मिलते थे। उनकी मां को इसकी जानकारी थी, लेकिन परिवार के बाकी लोगों को नहीं। फरहाना का कहना है कि जिम्मेदारियां संभालने के बाद उन्होंने कभी किसी से पैसे नहीं मांगे। टीवी पर विज्ञापन आते ही घर में मच गया बवाल-फरहाना ने बताया कि शुरुआत में वह चोरी-छिपे मॉडलिंग और विज्ञापनों में काम करती थीं। परिवार को इसकी जानकारी तब हुई जब उनका एक विज्ञापन टीवी पर प्रसारित हुआ। इसके बाद घर में हंगामा मच गया। रिश्तेदारों ने सवाल उठाया कि घर की लड़की टीवी पर कैसे दिखाई दे सकती है। कुछ लोगों का कहना था कि इससे परिवार की बदनामी होगी और दूसरी लड़कियों की शादी पर असर पड़ेगा। हालांकि फरहाना अपने फैसले पर अड़ी रहीं। पिकनिक पर ले जाने से पहले सिर ढंकने की शर्त रखते थे-फरहाना ने बताया कि बचपन में उन्हें परिवार के कई कार्यक्रमों और पिकनिक में शामिल नहीं किया जाता था। अगर ले जाया जाता था तो उनकी मां से कहा जाता था कि फरहाना सिर पर दुपट्टा रखें, तभी उन्हें साथ ले जाया जाएगा। उन्होंने कहा कि कई बार उनके साथ ऐसा व्यवहार किया जाता था जैसा किसी सौतेले बच्चे के साथ भी नहीं किया जाता। रिश्तेदार चाहते थे कि वह हर बात मानने वाली लड़की बनें, लेकिन उनका स्वभाव अलग था। रिश्तेदार कहते थे- इसे इसके पिता के पास छोड़ दो-फरहाना ने बताया कि कुछ रिश्तेदार उनकी मां से कहते थे, 'इसे इसके पिता के पास छोड़ दो, यह हमारी इज्जत खराब कर देगी।' उन्होंने बताया कि लोग उनके वीडियो बनाने और मॉडलिंग करने पर ताने मारते थे। कुछ लोगों ने धमकी भरे लहजे में कहा था कि 'किसी दिन इसे गाड़ी के नीचे कर देंगे।' फरहाना कहती हैं कि ऐसी बातें उन्हें तोड़ती थीं, लेकिन बाद में यही उनकी ताकत बन गईं। 'मैं उनकी आंखों का कांटा थी, कठपुतली नहीं' फरहाना ने कहा कि बचपन से वह सवाल पूछने वाली और अपने फैसले खुद लेने वाली लड़की थीं। यही वजह थी कि परिवार के कुछ लोगों को वह पसंद नहीं थीं। उन्होंने कहा, 'मैं हमेशा उनकी आंखों का कांटा थी। लेकिन मुझे खुशी है कि मैं किसी की कठपुतली नहीं बनी।' फरहाना का मानना है कि अगर उन्हें बचपन में इतना विरोध और तिरस्कार नहीं मिला होता, तो शायद उनके अंदर खुद को साबित करने की

इतनी आग नहीं होती। इम्तियाज अली की फिल्म मिली, लेकिन पैसे के लिए की थी-फरहाना ने बताया कि जब उन्हें 'लैला मजनू' में काम करने का मौका मिला तो वह स्टार बनने के बारे में नहीं सोच रही थीं। उन्होंने फिल्म इसलिए की क्योंकि इसके लिए उन्हें अच्छी रकम मिल रही थी। उन्हें लगा था कि फिल्म ज्यादा नहीं चलेगी, लेकिन कश्मीर में वह काफी लोकप्रिय हो गई। इसके बाद रिश्तेदार और पड़ोसी उनकी मां को बधाई देने घर आने लगे। लोगों को गर्व होने लगा कि उन्होंने इम्तियाज अली और साजिद अली जैसे निर्देशकों के साथ काम किया है। पत्रकारिता छोड़ एक्टिंग को चुना-फरहाना बचपन से पत्रकार बनना चाहती थीं। उन्होंने कश्मीर के कई बड़े न्यूज चैनलों और अखबारों में इंटर्नशिप की। लेकिन कुछ समय बाद उन्हें महसूस हुआ कि वह 9 से 5 की नौकरी नहीं कर सकतीं। उन्हें लगा कि अभिनय ही ऐसा काम है जिसे वह पूरी जिंदगी कर सकती हैं। इसके बाद उन्होंने एक्टिंग को ही करियर बनाने का फैसला किया। सिविल सर्विस छोड़ने का मन बनाया, ज्योतिषी ने बदल दी सोच

एक समय फरहाना ने एक्टिंग छोड़कर सिविल सर्विसेज की तैयारी करने का फैसला कर लिया था। इसी दौरान दिल्ली में उनकी मुलाकात एक ज्योतिषी से हुई। फरहाना के मुताबिक, ज्योतिषी ने उनकी जन्मतिथि देखकर कहा, 'तुम्हारा नाम सिविल सर्विस में नहीं लिखा है। तुम्हें शोबिज में ही सफलता मिलेगी।'

उन्होंने बताया कि जनवरी 2025 में एक अन्य ज्योतिषी ने भी उनसे कहा था कि यह साल उनकी जिंदगी बदल देगा और उन्हें बड़ी पहचान मिलेगी। कश्मीर की लड़कियों के लिए नहीं छोड़ी इंडस्ट्री-फरहाना ने बताया कि संघर्ष के दौरान कई बार उनके मन में एक्टिंग छोड़ने का ख्याल आया। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकीं, क्योंकि कश्मीर की कई लड़कियां उन्हें प्रेरणा मानती थीं। उन्हें अक्सर मैसेज मिलते थे कि अगर फरहाना समाज और परिवार की बंदिशों को तोड़कर आगे बढ़ सकती हैं, तो वे भी अपने सपने पूरे कर सकती हैं। फरहाना कहती हैं कि अगर वह हार मान लेतीं तो उन लड़कियों का भरोसा टूट जाता। मुंबई में कास्टिंग स्कैम का शिकार होते-होते बचीं-करियर के शुरुआती दिनों में फरहाना को एक महिला ने बॉलीवुड फिल्म का झांसा देकर मुंबई बुलाया। उन्हें बताया गया कि फिल्म की शूटिंग शुरू होने वाली है और रहने का इंतजाम होटल में किया गया है। लेकिन मुंबई पहुंचने पर उन्हें होटल की जगह एक कथित डायरेक्टर के घर ले जाया गया। देर रात तक उन्हें वहीं बैठाए रखा गया। धीरे-धीरे उन्हें एहसास हुआ कि कुछ गड़बड़ है। कॉन्ट्रैक्ट में लिखी थीं संदिग्ध शर्तें-फरहाना ने बताया कि रात में उन्हें एक कॉन्ट्रैक्ट पढ़ने के लिए दिया गया। उसमें ऐसी शर्तें थीं कि कलाकारों को एक-दो हफ्ते तक डायरेक्टर के फार्महाउस पर रहना होगा। कॉन्ट्रैक्ट पढ़ते ही उन्हें समझ आ गया कि मामला संदिग्ध है। उन्होंने तुरंत उस महिला को फोन किया, जिसने उन्हें मुंबई बुलाया था और साफ कहा कि वह तुरंत वहां पहुंचे। डर के बीच हाथ में फूलदान लेकर बैठी थीं-फरहाना ने बताया कि जिस वक्त उन्हें डायरेक्टर के कमरे में बुलाया गया, वह बेहद डर गई थीं। उन्होंने सुरक्षा के लिए पास रखा फूलदान हाथ में पकड़ लिया था। उन्होंने अपनी दोस्त से कहा था कि अगर वह आदमी कोई गलत हरकत करेगा तो वह उसी फूलदान से उस पर हमला कर देंगी। बाद में उन्होंने दबाव बनाकर अपने और अपनी दोस्त के लिए वापसी की टिकट का इंतजाम कराया। दोनों सुरक्षित श्रीनगर लौट गईं। बाद में पता चला कि वह डायरेक्टर फ्रॉड था-फरहाना ने बताया कि कुछ समय बाद उन्हें जानकारी मिली कि वह कथित डायरेक्टर कई लोगों के साथ धोखाधड़ी कर चुका था। वह प्रोड्यूसर्स से पैसे लेकर भी गायब हो गया था। फरहाना मानती हैं कि अगर उस समय उन्होंने समझदारी नहीं दिखाई होती, तो स्थिति और खतरनाक हो सकती थी। नाना के निधन ने पूरी जिंदगी बदल दी-फरहाना के मुताबिक, उनके नाना उनके सबसे बड़े सहारे थे। उनके निधन के बाद उन्हें पहली बार महसूस हुआ कि अब उन्हें अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी। उन्होंने कहा कि उस दौर में उन्हें लगा जैसे किसी बड़े मैदान में उन्हें अकेले खड़ा कर दिया गया हो। यही उनकी जिंदगी का सबसे बड़ा टर्निंग पॉइंट साबित हुआ। बिग बॉस से पहले किसी ने कपड़े तक नहीं दिए-फरहाना ने बताया कि बिग बॉस में जाने से पहले उनके पास ज्यादा सोशल मीडिया फॉलोअर्स नहीं थे। इसी वजह से कई डिजाइनर और ब्रांड्स उनके साथ जुड़ना नहीं चाहते थे। कुछ लोगों ने कहा कि पहले एक-दो हफ्ते शो में टिक जाएं, उसके बाद कपड़े देंगे। शो के बाद वही लोग लाखों रुपए ऑफर करने लगे-फरहाना ने बताया कि बिग बॉस से बाहर आने के बाद वही डिजाइनर और ब्रांड्स उनके साथ काम करने के लिए उत्सुक हो गए। कुछ ब्रांड्स तीन आउटफिट्स के बदले दो लाख रुपए तक देने को तैयार थे। हालांकि उन्होंने अपनी टीम से साफ कह दिया कि जिन लोगों ने मुश्किल वक्त में साथ नहीं दिया, उनके साथ अब काम करने की जरूरत नहीं है। ऑडिशन दो और फिर भूल जाओ-फरहाना का कहना है कि उन्होंने आज तक किसी कास्टिंग डायरेक्टर को फोन कर यह नहीं पूछा कि उनका चयन हुआ या नहीं। उनका मानना है कि ऑडिशन देने के बाद उसे भूल जाना चाहिए। अगर वह काम आपकी किस्मत में होगा, तो खुद आपके पास आ जाएगा। सिंगम अगेन का ऑडिशन देकर भूल गई थीं-फरहाना ने बताया कि सिंगम अगेन के लिए उन्होंने चार महीने पहले ऑडिशन दिया था और फिर भूल गई थीं कि उन्होंने इसके लिए टेस्ट दिया है। बाद में उन्हें फिल्म मिल गई। वह कहती हैं कि जरूरत से ज्यादा उम्मीदें रखने के बजाय इंसान को मन संतुलित रखना चाहिए। सबसे बड़ा सपना- मां को वह जिंदगी देना जिसकी वह हकदार हैं-फरहाना कहती हैं कि उनका सपना सिर्फ पैसा कमाना या स्टार बनना नहीं है। वह अपनी मां को वह जिंदगी देना चाहती हैं जिसकी वह हकदार हैं। उनका कहना है कि बचपन में उनकी मां ने बहुत संघर्ष किया और कई खुशियां खो दीं। अब वह चाहती हैं कि उनकी मां दुनिया की हर वह खुशी हासिल करें, जिसका उन्होंने सपना देखा था। फरहाना का मानना है कि जब आप परिवार और समाज की पुरानी सोच को तोड़कर नया रास्ता चुनते हैं, तो सबसे पहले अपने ही लोग सवाल उठाते हैं। लेकिन अगर इरादा साफ हो, तो खुद पर भरोसा बनाए रखना चाहिए, क्योंकि आखिरकार वही भरोसा मंजिल तक पहुंचाता है। 'खतरों के खिलाड़ी 15' में आएंगी नजर

फरहाना कहती हैं- इस शो को लेकर एक्साइटमेंट भी है और डर भी। यह लाइफटाइम एक्सपीरियंस है, क्योंकि असल जिंदगी में ऐसे स्टंट नहीं कर सकते। रोहित शेट्टी जैसे लीजेंड के साथ और पूरी सेफ्टी के बीच यह सब करना बहुत बड़ी बात है। मैं इस शो के जरिए अपनी पर्सनैलिटी का नया हिस्सा एक्सप्लोर करना चाहती हूं। इसमें असली मुकाबला दूसरे कंटेस्टेंट्स से नहीं, बल्कि अपने डर से होता है। मैं आज भी बहुत सारी चीजों से डरती हूं। फर्क सिर्फ इतना है कि अब शायद मुझे उन डरों को करीब से देखने का मौका मिलेगा। जिंदगी इतनी तेज भागती है कि इंसान अपने डर के सामने रुककर खड़ा नहीं हो पाता, लेकिन अब शायद मौका मिलेगा कि डर को इतना करीब से देखूं कि वह खत्म हो जाए।

स्वत्वाधिकारी
प्रकाशक एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1- मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं एम2ए/25 एडीए कालोनी नैनी प्रयागराज 211008 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक
डॉ.दीपक अरोरा
मो 0 न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।